* 20th Year
* Issue: 123
* 05.09.2026 (SATURDAY)
* ROURKELA
* R.N.I. No. ORIHIN/2006/18978
* (Pages-6)
* Price:2.00

दैनिक

कलिंग समाचार

The kalingasamachar

प्रकाशक एवं संपादक : प्रकाश कुमार धल

Published From ODISHA, JHARKHAND & CHHATTISHGARH

e-paper-www.thekalingasamachar.com

नेपाल बाढ़ के बाद २७५ भारतीय लापता, भारत ने १५ टन राहत सामग्री भेजी

नयी दिल्ली ०४/०९ (संवाददाता): विदेश मंत्रालय ने शुक्रवार को बताया कि नेपाल-तिज़्बत सीमा के पास आई भीषण बाढ़ के बाद 275 भारतीय अब भी लापता हैं, जबकि 166 अन्य लोगों को बचा लिया गया है। मंत्रालय ने बताया कि चीन से नेपाल में 1,907 भारतीय नागरिक सुरक्षित पहुंच गए हैं। विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता रणधीर जायसवाल ने बताया कि 26 अगस्त को नेपाल में अचानक आई भीषण बाढ़ के बाद से भारत ने करीब 95 टन राहत सामग्री नेपाल को भेजी है। नेपाल के अधिकारियों के अनुसार, प्रभावित क्षेत्रों से बचावकर्मियों द्वारा और शव बरामद किए जाने के बाद बाढ़ में मरने वालों की संज़्या बढ़कर 1,295 हो गई है।

बचाव और तलाश अभियान जारी रहने के बीच आपातकालीन दलों ने 12,000 से अधिक लोगों को बचा लिया है, जबकि करीब 5,000 लोग अब भी लापता हैं। जायसवाल ने प्रेस वार्ता में कहा, ''हमारी जानकारी के अनुसार, 275 भारतीय नागरिक अब भी लापता हैं। हम नेपाल सरकार के साथ लगातार करीबी संपर्क में हैं।''

उन्होंने कहा, ''हम इस संबंध में नेपाल के अधिकारियों के प्रयासों की सराहना करते हैं। अब तक 166 भारतीय नागरिकों को बचाया गया है और 1,907 भारतीय नागरिक चीन से सुरक्षित रूप से नेपाल पहुंच चुके हैं।'' जायसवाल ने कहा, ''चीन की आधिकारिक सूचना के अनुसार, चीन के तिज़्बत स्वायज़ क्षेत्र में कोई भी भारतीय यात्री फंसा हुआ नहीं है।'' विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता ने कहा कि भारत नेपाल सरकार की जरूरतों के अनुसार उसकी सहायता जारी रखेगा। उन्होंने कहा, ''हम नेपाल सरकार के अनुरोध पर और अधिक फॉरेंसिक किट, बेली पुल और अन्य सामग्री भेजने की योजना बना रहे हैं।'' जायसवाल ने बताया कि भारत अब तक सात विमानों के जरिए करीब 95 टन राहत सामग्री नेपाल भेज चुका है।

उन्होंने कहा, ''राहत सामग्री के अलावा, हमने नेपाल में राहत और बचाव कार्यों में सहायता के लिए 54 कर्मियों को भी भेजा है। इनमें 30 सुरंग बचाव विशेषज्ञ, 19 फॉरेंसिक विशेषज्ञ और पांच सदस्यीय चिकित्सा दल शामिल हैं। हमारे बचाव और फॉरेंसिक दल मौके पर तैनात हैं और वे नेपाल के अधिकारियों के साथ मिलकर काम कर रहे हैं।'' भारत की ओर से राहत सामग्री की पहली खेप प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी द्वारा 26 अगस्त को नेपाल के अपने समकक्ष बालेन्द्र शाह से बातचीत करने के कुछ घंटे बाद भेजी गई थी। मोदी ने शाह को हालात से निपटने के लिए हरसंभव मानवीय सहायता उपलज़्ध कराने का आश्वासन दिया था। स्थानीय अधिकारियों के अनुसार, बाढ़ से मुज़्य रूप से मध्य नेपाल में 35 पुल, 45 झूला पुल और 40 किलोमीटर लंबी पक्की सड़कों को नुकसान पहुंचा है। जायसवाल ने कहा कि भारत ने नेपाल में आई अचानक बाढ़ के बाद तुरंत कदम उठाया और दोहराया कि वह देश में पुनर्निर्माण और राहत कार्यों में लगातार सहयोग करता रहेगा। नेपाल में आई बाढ़ के संदर्भ में जलवायु परिवर्तन से जुड़े सवाल पर जायसवाल ने कहा कि भारत का लगातार यह रुख रहा है कि यह एक साझा चुनौती है और इस संबंध में कार्रवाई ''साझा लेकिन अलग-अलग जिज़्मेदारियों और संबंधित क्षमताओं'' के सिद्धांत पर आधारित होनी चाहिए।

जन्माष्टमी पर कृष्ण भक्ति में डूबे योगी आदित्यनाथ, श्रीकृष्ण जन्मभूमि में की विशेष पूजा-अर्चना

लखनऊ ०४/०९ (संवाददाता): आप सभी को श्रीकृष्ण जन्माष्टमी पर बहुत बहुत बधाई। श्रीकृष्ण जन्माष्टमी के पावन अवसर पर मुज़्यमंत्री योगी आदित्यनाथ श्री कृष्ण जन्मभूमि परिसर पहुँचे। यहां सबसे पहले गो पूजन करने के बाद उन्होंने मुज़्य मंदिर में भगवान श्रीकृष्ण के दर्शन व विशेष पूजन अर्चना किया। राधे, राधे और जयश्री कृष्णा के जयघोष के बीच मुज़्यमंत्री ने पूर्ण विधि विधान से पूजा अर्चना की। मंदिर में सुबह से ही भक्तों के भारी जमावड़े के बीच सुरक्षा के विशेष प्रबंध किये गये हैं। हम आपको बता दें कि मुज़्यमंत्री योगी आदित्यनाथ हर जन्माष्टमी पर मथुरा आते हैं और श्री राधा-कृष्ण जी का पूजन करते हैं। आइये देखते हैं आज के पूजन के दौरान की झलकियाँ।

हम आपको यह भी बता दें कि मुज़्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने अपने दौरे के दौरान ब्रज क्षेत्र को विकास की नई सौगात दी। मुज़्यमंत्री गुरुवार 3 सितंबर को दो दिवसीय प्रवास पर मथुरा आये थे। इस दौरान उन्होंने ब्रजवासियों को करीब 1051 करोड़ रुपये की 229 विकास परियोजनाओं का बड़ा उपहार दिया। इस भव्य समारोह के दौरान 540 करोड़ रुपये से अधिक की लागत वाली 62 विकास परियोजनाओं का लोकार्पण किया गया, जिससे शहर के बुनियादी ढांचे और पर्यटन को नई मजबूती मिलेगी। इसके साथ ही 437 करोड़ रुपये की लागत वाली 167 नई योजनाओं का शिलान्यास हुआ। समारोह में मुज़्यमंत्री ने पीएम आवास (शहरी) और सीएम आवास (ग्रामीण) योजना के लाभार्थियों को 72 करोड़ से अधिक की सहायता राशि का वितरण भी किया। इसके अलावा विभिन्न योजनाओं के लाभार्थियों को ट्रैज़्टर की चाबी, चेक और प्रमाण पत्र भी सौंपे गये। मुज़्यमंत्री योगी आदित्यनाथ का यह दो दिवसीय मथुरा प्रवास विकास और धर्म के अद्भुत संगम का साक्षी बना। वृंदावन स्थित पवनहंस हेलीपैड पर उतरने के बाद मुज़्यमंत्री गीता शोध संस्थान गये थे और वहां नवनिर्मित और अत्याधुनिक %श्री स्वामी हरिदास प्रेक्षागृह% का भव्य लोकार्पण किया, जहां एक हजार लोगों के बैठने की उत्कृष्ट व्यवस्था है। इस कार्यक्रम के दौरान सीएम योगी ने प्रो-पुअर प्रदर्शनी का अवलोकन किया, वृक्षारोपण किया, संतों से मुलाकात की और बच्चों का अन्नप्राशन संस्कार संपन्न कराया। साथ ही विभिन्न सरकारी योजनाओं के लाभार्थियों को प्रमाण पत्र व चेक वितरित कर जनसभा को संबोधित किया। इसके बाद मुज़्यमंत्री ने उज़्ार प्रदेश ब्रज तीर्थ विकास परिषद के कार्यों की प्रगति जानने के लिए अहम समीक्षा बैठक की।

नेपाल की अंधेरी सुरंग में 9 दिनों तक मौत से जंग... हरे कृष्ण जाप से बची जान, जन्माष्टमी पर मिला संजय साह को नया जीवन!

नयी दिल्ली ०४/०९ (संवाददाता): नेपाल में आई विनाशकारी बाढ़ और भूस्खलन के नौ दिन बाद त्रिशूली 3 हाइड्रोपावर प्रोजेज़्ट की सुरंग से सुरक्षित बाहर निकाले गए कर्मचारी संजय साह ने अपनी आपबीती सुनाते हुए इसे भगवान का चमत्कार बताया है। नेपाल इलेज़्ट्रिसिटी अथॉरिटी (ङ्खश्व) के 30 वर्षीय कर्मचारी संजय साह ने बताया कि जब टनल के भीतर मौत मंडरा रही थी, तब उन्होंने हिज़्मत नहीं हारी और लगातार नौ दिनों तक हरे कृष्ण महामंत्र का जाप करते रहे। इज़्ेफाक से जिस दिन उन्हें सुरक्षित निकाला गया, उस दिन श्री कृष्ण जन्माष्टमी का पावन पर्व भी था। संजय साह के तौर पर हुई है, जो नेपाल इलेज़्ट्रिसिटी अथॉरिटी के कर्मचारी थे। वह मूल रूप से नेपाल के मधेस प्रांत के सप्तरी ज़िले के रहने वाले हैं। टनल के अंदर फँसने के नौ दिन बाद अधिकारियों ने उन्हें बचाया। चमत्कारिक रूप से बचाए जाने के बाद शुक्रवार को पत्रकारों से बात करते हुए साह ने कहा कि हादसे के बाद जब दूसरे लोग भाग गए, तो वह टनल के अंदर ही रुके रहे और लगातार नौ दिनों तक %हरे कृष्ण% मंत्र का जाप करते रहे। न्यूज़ एजेंसी के अनुसार, उन्होंने कहा, मैं पिछले नौ दिनों से हरे कृष्ण महामंत्र का जाप कर रहा था। मौके पर शुरुआती मेडिकल मदद मिलने के बाद साह को त्रिशूली के एक अस्पताल ले जाया गया। अभी उनकी हालत स्थिर है और उन्हें स्वास्थ्य संबंधी कोई समस्या नहीं है। साह को 45 साल के कबीर महर्जन के साथ बचाया गया था। महर्जन को स्वास्थ्य संबंधी दिक्कतों के कारण काठमांडू के छाउनी स्थित नेपाल आर्मी हॉस्पिटल एयरलिज़्ट किया गया है। साह ने बताया कि जब हादसा हुआ, तो वह कंट्रोल रूम के अंदर थे। साह ने कहा, मैं कंट्रोल रूम में काम कर रहा था। मेरी ज़िज़्मेदारी सबकी जान बचाना थी। उन्होंने यह भी कहा कि उन्होंने दूसरों से वहाँ से निकलने के लिए कहा था। जब तक दूसरे लोग वहाँ से निकले, तब तक उनके लिए भागना बहुत देर हो चुकी थी।

तेजस्वी यादव ने बिहार में बाढ़ संकट पर बिहार सरकार को घेरा, उठाए सवाल

पटना ०४/०९ (संवाददाता): राजद के कार्यकारी अध्यक्ष तेजस्वी यादव ने बृहस्पतिवार को आरोप लगाया कि केंद्र और बिहार सरकार राज्य में हर वर्ष आने वाली बाढ़ की समस्या का कोई ''स्थायी समाधान'' निकालने में विफल रही है। तेजस्वी ने संवाददाताओं से कहा, ''केंद्र में 12 वर्षों और बिहार में 20 वर्षों से सज़ा में रही भाजपा नीत राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (राजग) सरकारें बाढ़ जैसी समस्या और उससे होने वाली तबाही का स्थायी समाधान नहीं खोज सकीं।'' उन्होंने सरकार से आग्रह किया कि जन-धन और पशुधन की हानि रोकने के लिए जमीनी स्तर पर विशेष ध्यान दिया जाए, ज़्योंकि ''आगे और बड़ा खतरा मंडरा सकता है।''

बिहार विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष तेजस्वी ने कहा कि वह शुक्रवार को अपने विधानसभा क्षेत्र राघोपुर के बाढ़ प्रभावित इलाकों का दौरा कर स्थिति का जायजा लेंगे। जनता दल यूनाइटेड (जदयू) की शनिवार से प्रस्तावित 'नीतीश संवाद यात्रा' पर पूछे गए एक सवाल के जवाब में तेजस्वी ने आरोप लगाया कि जदयू के कई नेता, जिनमें उसके राष्ट्रीय कार्यकारी अध्यक्ष भी शामिल हैं, भाजपा के इशारे पर अपनी ही पार्टी को कमजोर करने में लगे हैं। भौगोलिकसंदर्भ

उन्होंने दावा किया, ''मुज़्यमंत्री पद से हटाने के बाद नीतीश को राज्यसभा भेज दिया गया। जदयू को खत्म कर दिया गया है। संजय कुमार झा जैसे नेता वास्तव में भाजपा के व्यक्ति हैं और प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी तथा गृह मंत्री अमित शाह की चापलूसी में लगे हैं।

अंतत: वे भाजपा में ही लौट जाएंगे।'' तेजस्वी ने देश की मौजूदा आर्थिक स्थिति को लेकर भी केंद्र सरकार की आलोचना की और प्रधानमंत्री मोदी से रील बनाने के बजाय जमीनी हकीकत पर ध्यान देने की अपील की।

आसमान में भारत की आंख तैनात! जीएसएलवी-एफ १७ मिशन हुआ सफल

नयी दिल्ली ०४/०९ (संवाददाता): भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन के अध्यक्ष वी. नारायणन ने शुक्रवार को GSLV-F17 मिशन के सफल प्रक्षेपण पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए घोषणा की कि उन्नत अर्थ ऑज़्जर्वेशन सैटेलाइट को उसकी निर्धारित और आवश्यक कक्षा में सफलतापूर्वक स्थापित कर दिया गया है। उन्होंने इसे देश के लिए एक ऐतिहासिक उपलज़्धि करार देते हुए पुष्टि की कि उपग्रह पूरी तरह से सामान्य और ठीक स्थिति में काम कर रहा है। आंध्र प्रदेश के श्रीहरिकोटा स्थित सतीश धवन अंतरिक्ष केंद्र से उड़ान भरने के लगभग 18 मिनट बाद, EOS-05 सैटेलाइट को सब-जियोसिंक्रोनस ट्रांसफर ऑर्बिट में स्थापित किया गया। प्रेस कॉन्फ्रेंस को संबोधित करते हुए ढ्ढस्क्रह्र चीफ ने बताया कि यह भारत के इतिहास में पहली बार है जब किसी अर्थ ऑज़्जर्वेशन उपग्रह को 36,000 किलोमीटर की ऊंचाई पर स्थित जियो-प्लेटफॉर्म पर तैनात किया गया है।नारायणन ने कहा कि सैटेलाइट की तय लाइफटाइम सात साल है, लेकिन उन्हें भरोसा है कि यह नौ साल तक काम करता रहेगा। उन्होंने कहा, इस सैटेलाइट की अहमियत यह है कि यह पहला सैटेलाइट है जिसे हमारे देश के अर्थ ऑज़्ज़र्वेशन मक़सद और कई तरह के इस्तेमाल के लिए 36,000 द्मद्व ऊँचे जियो-प्लेटफ़ॉर्म पर लगाया जा रहा है। यह आज तक त्नस्रुङ्क व्हीकल से लॉन्च किया गया सबसे भारी सैटेलाइट है... इस फाइनेंशियल ईयर में यह दूसरा सफल मिशन है। मीडिया ब्रीफ़िंग के दौरान, नारायणन ने कहा कि इस कैलेंडर ईयर में पहले बिना ज़्रू वाले गगनयान मिशन पर ज़ोरदार और व्यवस्थित तरीके से काम चल रहा है। उन्होंने आगे कहा कि ढ्ढस्क्रह्र इस फाइनेंशियल ईयर में छह और लॉन्च करने का लक्ष्य रख रहा है। उन्होंने कहा, गगनयान एक टेज़्नोलॉजी-बेस्ड मिशन है।

राम मंदिर के नए सीईओ जीतेंद्र मिश्रा ने राम भक्तों से मांगा समय और आशीर्वाद

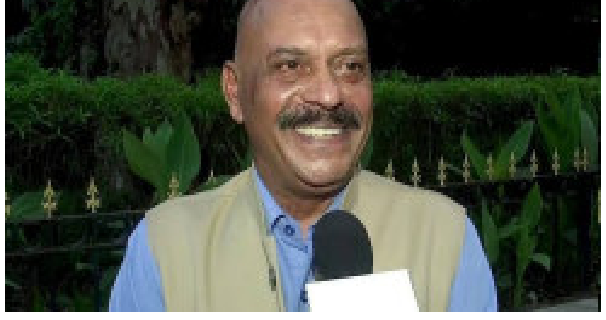

नयी दिल्ली ०४/०९ (संवाददाता): राम मंदिर ट्रस्ट के नए ष्टश्वह्र बनने के बाद एयर मार्शल (सेवानिवृज़्) जितेंद्र मिश्रा ने शुक्रवार को राम भक्तों से समर्थन और आशीर्वाद मांगा। उन्होंने कहा कि ट्रस्ट की व्यवस्थाओं को समझने और नई रणनीति को लागू करने के लिए उन्हें थोड़ा समय दिया जाए। उन्होंने भरोसा दिलाया कि जल्द ही उनकी योजनाओं के नतीजे जमीन पर दिखाई देने लगेंगे।

ट्रस्ट के सदस्यों के साथ बैठक के बाद जितेंद्र मिश्रा ने कहा कि राम भक्तों का विश्वास और आशीर्वाद उनके लिए बेहद महत्वपूर्ण है। उन्होंने अपील की कि भक्तों का आशीर्वाद आगे भी उनके साथ बना रहे। उन्होंने कहा कि राम भक्तों के विश्वास के साथ वह ट्रस्ट की जिज़्मेदारियों को आगे बढ़ाएंगे। साथ ही उन्होंने लोगों से कुछ समय देने की अपील की, ताकि व्यवस्थाओं में किए जाने वाले बदलावों को सही तरीके से लागू किया जा सके। जितेंद्र मिश्रा को बुधवार को श्री राम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट का पहला ष्टश्वह्र नियुक्त किया गया था। पद संभालने के बाद उन्होंने कहा कि फिलहाल वह ट्रस्ट की पूरी व्यवस्था और कामकाज को समझने की कोशिश कर रहे हैं। उन्होंने बताया कि ट्रस्ट के सदस्यों से मुलाकात और राम मंदिर के दौरे के बाद उन्होंने अपनी योजनाओं को लागू करने की दिशा में काम शुरू कर दिया है।

जितेंद्र मिश्रा ने कहा कि उनकी रणनीति के परिणाम आने वाले कुछ दिनों में दिखाई देने लगेंगे। बैठक के बारे में उन्होंने बताया कि इसमें अलग-अलग हितधारकों के साथ मिलकर काम करने और ट्रस्ट के काम को बेहतर तरीके से आगे बढ़ाने पर चर्चा हुई। उन्होंने कहा कि सभी संबंधित लोगों के साथ बेहतर तालमेल बनाना और ट्रस्ट की व्यवस्था को प्रभावी ढंग से आगे बढ़ाना उनकी प्राथमिकताओं में शामिल है।

राम मंदिर ट्रस्ट की बड़ी जिज़्मेदारी मिलने पर जितेंद्र मिश्रा ने भगवान श्री राम के प्रति आभार जताया। उन्होंने कहा कि भगवान राम ने उन्हें इतनी बड़ी जिज़्मेदारी देकर अपनी कृपा की है और इससे बड़ी उपलज़्धि उनके लिए और ज़्या हो सकती है।

राम मंदिर ट्रस्ट की बैठक अयोध्या स्थित वैदेही भवन में हुई। इसमें ट्रस्ट के महासचिव गोविंद देव गिरि समेत कई सदस्य शामिल हुए। कुछ सदस्यों ने वीडियो कॉन्फ्रेंस के माध्यम से बैठक में हिस्सा लिया।बता दें कि बुधवार को राम मंदिर ट्रस्ट के प्रबंधन में कई महत्वपूर्ण बदलाव किए गए थे। एयर मार्शल (सेवानिवृज़्) जितेंद्र मिश्रा को ट्रस्ट का पहला ष्टश्वह्र नियुक्त किया गया। वहीं गोविंद देव गिरि को नया महासचिव और दिल्ली के महेश भागचंदका को कोषाध्यक्ष बनाया गया। इसके अलावा अयोध्या के मदन मोहन पांडे, शिकोहाबाद की डॉ. निर्मला यादव और महेश भागचंदका को नए ट्रस्टी के तौर पर शामिल किया गया। डॉ. निर्मला यादव ट्रस्ट की पहली महिला सदस्य हैं। जितेंद्र मिश्रा उन तीन उज़्मीदवारों में शामिल थे, जिन्हें ष्टश्वह्र पद के लिए चयन समिति ने चुना था। समिति ने इस पद के लिए मिले 5,585 आवेदनों की जांच के बाद उज़्मीदवारों का चयन किया था। जितेंद्र मिश्रा 'ऑपरेशन सिंदूर' के दौरान पश्चिमी वायु कमान का नेतृत्व कर चुके हैं।

राम मंदिर में चढ़ावे और दान की कथित चोरी के मामले के सामने आने के बाद ट्रस्ट के प्रबंधन में बदलाव किए जाने की बात सामने आई है। इस मामले के बाद ट्रस्ट के पूर्व महासचिव चंपत राय और ट्रस्ट सदस्य अनिल मिश्रा समेत कुछ प्रमुख पदाधिकारियों ने इस्तीफा दिया था। वहीं, विशेष आमंत्रित सदस्य गोपाल राव को उनकी जिज़्मेदारियों से मुक्त कर दिया गया था। कथित दान चोरी के मामले में आठ लोगों की गिरज़्तारी की जानकारी सामने आई है और वे फिलहाल जेल में हैं।

विविध समाचार

दिशा सालियान मौत मामले में सीबीआई जांच के आदेश

मुंबई ०४/०९ (संवाददाता): शिवसेना यूबीटी नेता आदित्य ठाकरे की मुश्किलें बढ़ सकती हैं, ज्योंकि दिशा सालियान मौत मामले में बॉज्बे हाईकोर्ट ने ष्टक्चढ्ढ को स्नढ्ढक्र दर्ज कर जांच अपने हाथ में लेने का आदेश दे दिया है। हालांकि, अदालत ने साफ किया है कि उसने आदित्य ठाकरे या किसी अन्य व्यक्ति के खिलाफ कोई प्रतिकूल टिप्पणी या निष्कर्ष नहीं दिया है। अब यह पूरी तरह CBI की जांच और जुटाए जाने वाले साक्ष्यों पर निर्भर करेगा कि किसी व्यक्ति के खिलाफ संदेह के पर्याप्त आधार बनते हैं या नहीं। हम आपको बता दें कि अभिनेता सुशांत सिंह राजपूत की पूर्व मैनेजर दिशा सालियान की रहस्यमय मौत के करीब छह साल बाद बॉज़्बे हाईकोर्ट ने मुंबई पुलिस की जांच पर गंभीर सवाल खड़े करते हुए मामले की ष्टक्चढ्ढ जांच का आदेश दिया है। न्यायमूर्ति सारंग कोतवाल और न्यायमूर्ति रंजीतसिंह राजा भोंसले की खंडपीठ ने मुंबई पुलिस को मामले से जुड़े सभी दस्तावेज और रिकॉर्ड तत्काल CBI को सौंपने का निर्देश दिया है। साथ ही जांच किसी अनुभवी और वरिष्ठ अधिकारी से कराने को कहा गया है। 44 पन्नों के फैसले में हाईकोर्ट ने मुंबई पुलिस की जांच में गंभीर विसंगतियों का उल्लेख करते हुए कहा कि जांच जवाब देने से ज्यादा सवाल खड़े करती है। अदालत ने यह भी हैरानी जताई कि करीब छह वर्षों तक जांच चलती रही, लेकिन स्नढ्ढक्र तक दर्ज नहीं की गई। कोर्ट ने कहा कि पुलिस को संज्ञेय अपराध की जांच का पर्याप्त अवसर मिला, लेकिन उसने न तो स्नढ्ढक्र दर्ज की और न ही अपेक्षित तरीके से जांच आगे बढ़ाई। हम आपको याद दिला दें कि दिशा सालियान 8 जून 2020 को मुंबई के मलाड इलाके में एक आवासीय इमारत से गिरने के बाद मृत पाई गई थीं। मुंबई पुलिस ने इसे पहले आकस्मिक मृत्यु का मामला (ष्ठक्र) दर्ज किया और बाद में जांच के आधार पर आत्महत्या बताया। लेकिन दिशा के पिता सतीश सालियान ने पुलिस की जांच पर सवाल उठाते हुए हाईकोर्ट का दरवाजा खटखटाया। उन्होंने अपनी बेटी के साथ सामूहिक दुष्कर्म और हत्या का आरोप लगाया तथा प्रभावशाली लोगों को बचाने के लिए राजनीतिक स्तर पर साजिश और पर्दादारी का आरोप भी लगाया। सतीश सालियान की याचिका में शिवसेना नेता और विधायक आदित्य ठाकरे के खिलाफ आरोपों की जांच की मांग भी की गई थी। हालांकि, हाईकोर्ट ने स्पष्ट किया कि किसी भी व्यक्ति को केवल अदालत के समक्ष लगाए गए आरोपों के आधार पर आरोपी नहीं माना जा सकता। जांच अधिकारी को

साक्ष्यों के आधार पर ही यह तय करना होगा कि किसी के खिलाफ 卐उचित संदेह के पर्याप्त आधार हैं या नहीं।हाईकोर्ट ने घटनास्थल की जांच, यानी स्पॉट पंचनामा में देरी पर भी सवाल उठाए। अदालत ने घटनास्थल पर खून नहीं मिलने और चोटों के स्वरूप को लेकर भी संदेह जताया। कोर्ट ने टिप्पणी की कि इतनी ऊंचाई से गिरने की स्थिति में केवल ठोड़ी पर एक चोट और चेहरे की कोई हड्डी न टूटना स्वीकार करना कठिन है। अभियोजन ने दलील दी थी कि बारिश के कारण खून के निशान धुल गए होंगे, लेकिन अदालत ने नोट किया कि जिस बारिश का हवाला दिया गया, वह घटना के कई घंटे बाद हुई थी।

कपड़ों को लेकर भी अदालत ने विरोधाभास दर्ज किया। पंचनामा और पोस्टमार्टम रिपोर्ट में शव को बिना कपड़ों के बताया गया, जबकि अस्पताल और शवगृह की तस्वीरों में दिशा के शरीर पर कपड़े दिखाई देने की बात सामने आई। अदालत ने इन तथ्यों पर कोई अंतिम निष्कर्ष नहीं दिया, लेकिन कहा कि इनमें 卐तर्कसंगत संदेह की पर्याप्त गुंजाइश卐 है। राजनीति

अब ष्टक्चढ्ढ सतीश सालियान का बयान दर्ज कर स्नढ्ढक्र करेगी और मामले की नए सिरे से जांच शुरू करेगी। यदि जांच में कोई आपराधिक मामला नहीं बनता, तो ष्टक्चढ्ढ को सक्षम अदालत में उपयुक्त समरी रिपोर्ट दाखिल करनी होगी, जिसे सतीश सालियान चुनौती भी दे सकेंगे। उधर, छह साल से न्याय की लड़ाई लड़ रहे सतीश सालियान ने फैसले पर राहत जताई, लेकिन कहा कि बेटी को खोने के बाद जश्न मनाने का कोई कारण नहीं है। उनका दर्द साफ था, मैं छह साल से इसका इंतजार कर रहा था। मैं खुश नहीं हूं, मैंने अपनी बेटी खो दी है। आज सिर्फ राहत मिली है। हम आपको यह भी बता दें कि आदित्य ठाकरे ने भी मामले में हस्तक्षेप की मांग करते हुए सतीश सालियान की याचिका को 卐झूठी, निराधार और प्रेरित卐 बताया था। लेकिन अब ष्टक्चढ्ढ जांच के आदेश के साथ यह मामला एक नए और बेहद संवेदनशील दौर में प्रवेश कर चुका है। जांच की दिशा और उसके निष्कर्ष ही तय करेंगे कि छह साल पुराने इस रहस्य की परतों के पीछे आखिर ज्या सच छिपा है। दूसरी ओर, दिशा सालियान मामले की ष्टक्चढ्ढ जांच का राजनीतिक असर भी शिवसेना पर पड़ सकता है। अगर जांच के दौरान आदित्य ठाकरे से जुड़े आरोपों की पड़ताल आगे बढ़ती है, तो पार्टी को कानूनी मोर्चे के साथ-साथ राजनीतिक और छवि संबंधी दबाव का भी सामना करना पड़ सकता है। हालांकि हाईकोर्ट ने स्पष्ट किया है कि आदित्य ठाकरे के खिलाफ कोई निष्कर्ष नहीं दिया गया है और किसी व्यक्ति को केवल आरोपों के आधार पर आरोपी नहीं माना जा सकता। लेकिन चूंकि शिवसेना (क्चञ्ज) पहले से ही संगठनात्मक अस्थिरता से जूझ रही है, ऐसे में अदालत का आज का फैसला पार्टी की मुश्किलें और बढ़ा सकता है। हम आपको याद दिला दें कि जून 2026 में पार्टी के छह सांसदों के शिंदे खेमे की ओर जाने को लेकर बड़ा राजनीतिक संकट पैदा हुआ था, जबकि अब कुछ मीडिया रिपोर्टों में कई विधायकों के भी एकनाथ शिंदे के संपर्क में होने और संभावित दलबदल की अटकलें तेज हैं। यदि सांसदों के बाद विधायकों का भी एक बड़ा समूह टूटता है, तो उद्धव ठाकरे की पार्टी के लिए यह 2022 के विभाजन के बाद सबसे गंभीर संगठनात्मक संकट साबित हो सकता है। माना जा रहा है कि आदित्य ठाकरे के इर्द-गिर्द ष्टक्चढ्ढ जांच की राजनीतिक बहस पार्टी पर दबाव और बढ़ा सकती है, ज्योंकि विपक्षी प्रतिद्वंद्वी इसे आक्रामक राजनीतिक मुद्दे के रूप में इस्तेमाल कर सकते हैं।

महबूबा ने यूएपीए के तहत जेल में बंद कैदियों की रिहाई की मांग की, उमर अज्दुल्ला ने दे दी यह सलाह

श्रीनगर ०४/०७ (संवाददाता): जज़्मू-कश्मीर पीपुल्स डेमोक्रेटिक पार्टी की प्रमुख महबूबा मुज़्ती ने सोमवार को मुज़्यमंत्री उमर अज़्दुल्ला से केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह से मिलने और गैरकानूनी गतिविधि रोकथाम अधिनियम (यूएपीए) के तहत गिरज़्तार जज़्मू-कश्मीर के लोगों की रिहाई पर चर्चा करने का आग्रह किया। महबूबा मुज़्ती ने यूएपीए के तहत जेल में बंद कैदियों की रिहाई की मांग को लेकर श्रीनगर में विरोध प्रदर्शन किया और जेल नहीं, ज़मानत चाहिए% का नारा लगाया।पत्रकारों से बात करते हुए महबूबा मुज़्ती ने कहा कि हम आज जज़्मू-कश्मीर और अन्य जगहों पर जेल में बंद निर्दोष लोगों, खासकर उन लोगों के लिए विरोध प्रदर्शन करना चाहते थे जिनके माता-पिता मुकदमा लड़ने में सक्षम नहीं हैं। हम मांग करना चाहते थे कि उमर अज़्दुल्ला गृह मंत्री से बात करें। पीडीपी प्रमुख ने

कहा कि अगर कैदियों को रिहा नहीं किया जा सकता, तो उन्हें स्थानीय स्तर पर, जज़्मू-कश्मीर में ही जेल में डाल दिया जाना चाहिए, ज्योंकि उनके परिवार अदालतों में उनके मुकदमे लड़ते हुए कष्ट झेलते हैं।महबूबा मुज़्ती ने कहा कि अगर निर्दोषों को रिहा नहीं किया जा सकता, तो उन्हें कम से कम जज़्मू-कश्मीर में ही जेल में डाल दिया जाना चाहिए... गरीब लोग अदालत नहीं जा सकते। जब वे बीमार होते हैं तो उनकी देखभाल कौन करता है? उनकी बात कौन सुनेगा?

यह राजनीति का मामला नहीं है; यह मानवता का मामला है। उन्होंने मुज़्यमंत्री अज़्दुल्ला से केंद्र शासित प्रदेश के बाहर की जेलों में यूएपीए के तहत बंद जज़्मू-कश्मीर के लोगों तक पहुँचने के लिए एक टीम गठित करने का अनुरोध किया। मुज़्ती की मांगों का जवाब देते हुए मुज़्यमंत्री उमर अज़्दुल्ला ने कहा कि उन्हें सीधे केंद्रीय मंत्री अमित शाह के सामने अपनी मांगें रखनी चाहिए। मुज़्यमंत्री ने कहा कि हम सभी इसे लेकर चिंतित हैं।

लेकिन श्रीनगर में विरोध प्रदर्शन करने से कोई फायदा नहीं होने वाला। जज़्मू-कश्मीर की सुरक्षा से जुड़े फैसले दिल्ली में गृह मंत्रालय लेता है।

डबल इंजन की सरकार के बावजूद राजस्थान रिफाइनरी का काम धीमा-अशोक गहलोत

नयी दिल्ली ०४/०९ (संवाददाता): राजस्थान के पूर्व मुज़्यमंत्री अशोक गहलोत ने पचपदरा में प्रस्तावित राजस्थान रिफाइनरी के कार्य की धीमी गति को लेकर भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) सरकार पर निशाना साधते हुए सोमवार को सवाल किया कि 'डबल इंजन' की सरकार होने के बावजूद रिफाइनरी का काम धीमा ज्यों है?गहलोत ने कहा कि राज्य की भाजपा सरकार ने 2025-26 की बजट घोषणा संज्या 158 में यह कहा था कि पचपदरा-बालोतरा स्थित रिफाइनरी अगस्त 2025 से उत्पादन शुरू कर देगी। उन्होंने 'एज़्स' पर पोस्ट कर कहा, ''कल मुज़्यमंत्री भजनलाल शर्मा और केंद्रीय मंत्री हरदीप सिंह पुरी ने रिफाइनरी का दौरा किया, परंतु दोनों के बयानों और सरकारी प्रेस नोट में रिफाइनरी के उत्पादन शुरू होने की तारीख का कोई जिक्र नहीं था।

घुसपैठ गंभीर समस्या, भारत की सीमा सुरक्षा के लिए मजबूत नीति महत्वपूर्ण-किरेन रीजीजू

नयी दिल्ली ०४/०९ (संवाददाता): केंद्रीय संसदीय कार्य मंत्री किरेन रीजीजू ने शुक्रवार को कहा कि भारत की सीमा सुरक्षा के लिए एक मजबूत नीतिगत ढांचा महत्वपूर्ण है। उन्होंने कहा कि पिछले दशक में सीमावर्ती क्षेत्रों के विकास में उल्लेखनीय बदलाव हुए हैं। 'सीमा पार से घुसपैठ- सामाजिक-आर्थिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक परिवेश पर प्रभाव' विषय पर दिल्ली विश्वविद्यालय में दो दिवसीय अंतरराष्ट्रीय सज़्मेलन के समापन समारोह को संबोधित करते हुए रीजीजू ने कहा, ''देश की शुरुआत सीमा से होती है। हमारे देश में ज्यादातर लोग सीमावर्ती इलाकों की समस्याओं को नहीं समझते। सीमा पार से घुसपैठ का सामाजिक-आर्थिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक परिवेश पर प्रभाव एक गंभीर समस्या है।''उन्होंने कहा, ''2014 से

पहले, जब हम सीमा पर जाते थे, तो उस पार के गांवों में सुविधाएं थीं, लेकिन हमारे यहां नहीं थीं। आज, एक मजबूत नीति के तहत, भारत साहस के साथ अपनी जमीन के हर इंच तक पहुंच रहा है।'' अरुणाचल प्रदेश के निवासी रीजीजू ने कहा कि कई सीमावर्ती गांवों के निवासियों ने बुनियादी सुविधाओं तक पहुंच की उज़्मीद छोड़ दी थी। उन्होंने कहा, ''2018 में, सड़कें, बिजली और नेटवर्क आखिरकार गुंजी (उज़्राखंड) जैसे दूरदराज के गांवों तक पहुंच गए। 2014 के बाद के नेतृत्व ने एक मज़बूत सीमा नीति शुरू की और अब सकारात्मक बदलाव दिखाई दे रहे हैं। इसके अलावा सीमा जागरण मंच, मोतीलाल नेहरू कॉलेज (सांध्यकालीन) और आंतरिक एवं जन सुरक्षा केंद्र (सीआईपीएस) द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित इस सज़्मेलन में डीयू, जेएनयू और हेमवती नंदन बहुगुणा गढ़वाल विश्वविद्यालय सहित विभिन्न विश्वविद्यालयों के 174 शोधकर्ताओं और छात्रों ने भाग लिया। सज़्मेलन के साथ आयोजित सांस्कृतिक कार्यक्रम में शामिल हुए केंद्रीय संस्कृति मंत्री गजेंद्र सिंह शेखावत ने सीमा मुद्दों पर जागरूकता बढ़ाने में सीमा जागरण मंच के क्रांतिकारी कार्य की प्रशंसा की। हेमवती विश्वविद्यालय के कुलपति श्रीप्रकाश सिंह ने सीमा संबंधी चिंताओं पर जन जागरूकता के महत्व पर बल दिया, जबकि सीमा जागरण मंच के राष्ट्रीय संयोजक मुरलीधर ने कहा कि घुसपैठ विकास में एक बड़ी बाधा बनी हुई है। मुरलीधर ने कहा, 卐देश की सुरक्षा केवल सेना और पुलिस की जिज़्मेदारी नहीं है; प्रत्येक नागरिक को अपनी भूमिका समझनी चाहिए। सज़्मेलन के संयोजक श्याम नारायण पांडे ने कहा कि सीमा पार से घुसपैठ दक्षिण एशिया को प्रभावित कर रही है, जिससे सुरक्षा, स्थानीय अर्थव्यवस्था और सांस्कृतिक पहचान प्रभावित हो रही है।

विवादित स्वतंत्र भारद्वाज को दिल्ली पुलिस ने बुलंदशहर से लिया हिरासत में

नयी दिल्ली ०४/०९ (संवाददाता): हिंदुत्व इन्ज़्लुएंसर स्वतंत्र भारद्वाज ने अपने भड़काऊ पोस्ट, राजनीतिक करीबी दिखाने और उकसाने वाले बयानों के जरिए सोशल मीडिया पर बड़ी संज़्या में प्रशंसक बना लिये थे। लेकिन जंतर-मंतर पर प्रदर्शन करने वाले एक व्यक्ति के पिता के साथ मारपीट करने की डींगें हांकने का वीडियो वायरल होने के बाद उसकी यही शेखी पुलिस के चंगुल में फंसने का कारण बनी। भारद्वाज खुद को 'सनातन योद्धा' बताते हैं और उन्हें शुक्रवार को उज़्र प्रदेश के बुलंदशहर से हिरासत में लिया गया।

दिल्ली पुलिस ने कॉकरोच जनता पार्टी (कॉजपा) प्रदर्शनकारियों को भरोसा दिलाया था कि राष्ट्रीय राजधानी में 20 जुलाई को हुए विरोध प्रदर्शन के दौरान छात्र कार्यकर्ता निशु आजाद के पिता संजय कुमार पर हुए कथित हमले के मामले में उसे 72 घंटे के अंदर गिरज़्तार कर लिया जाएगा। भारद्वाज को तब हिरासत में लिया गया जब एक साक्षात्कार का ज़्लिप वायरल हुआ। ज़्लिप में वह यह दावा करते हुए सुने गए कि उन्होंने कुमार का 'सिर फोड़ दिया' था, जिससे उन्हें ऐसी चोट आई कि 60 टांके लगाने पड़े, और फिर भी वे जेल जाने से बच गए।

भारद्वाज की सोशल मीडिया मौजूदगी पर नजर डालने से पता चलता है कि ऐसे बयान उनकी उस ऑनलाइन छवि से कोई अलग बात नहीं थी, जिसे उन्होंने बनाया था। भारद्वाज के फेसबुक पेज के करीब 3,27,000 अनुसरणकर्ता हैं। उसका सोशल मीडिया अकाउंट पोस्ट हिंदुत्व, गौ-रक्षा, मुसलमानों और सरकार के आलोचकों पर हमलों से जुड़ी पोस्ट और राजनीतिक हस्तियों व सरकारी कार्यक्रमों में उनकी नजदीकी दिखाने वाली तस्वीरें भरी पड़ी हैं। हिरासत में लिए जाने से एक दिन पहले बृहस्पतिवार को भारद्वाज ने सोशल मीडिया मंच 'एज़्स' पर ट्रेंड्स में अपना नाम दिखाते हुए एक स्क्रीनशॉट साझा किया और कैप्शन लिखा, ''लव यू ऑल विरोधी'। भारद्वाज ने इंस्टाग्राम पर अपनी एक तस्वीर भी पोस्ट की, जिसमें वह कलाई में पहने 'कड़े' को दिखा रहा है और उसके साथ कैप्शन लिखा था, '' फील द पावर!' (ताकत महसूस करें!)। यह दिल्ली पुलिस के उस बयान की ओर इशारा था जिसमें कहा गया था कि कुमार को चोट किसी हथियार से नहीं बल्कि 'कड़े' से लगी थी।

उनके फ़ेसबुक पेज पर 15 अगस्त को लाल किले पर उनकी तस्वीरें भी हैं, जिनमें ''सनातन नायक'' और 'गौरक्षक' जैसे हैशटैग इस्तेमाल किए गए हैं। एक और पोस्ट में, उन्होंने रक्षा मंत्रालय की ओर से इस साल स्वतंत्रता दिवस समारोह के लिए उनके नाम पर जारी किया गया निमंत्रण-पत्र प्रदर्शित किया है। भारद्वाज ने इसी तरह नौ जून, 2024 को नरेन्द्र मोदी सरकार के शपथ ग्रहण समारोह के लिए उन्हें मिले निमंत्रण पत्रों की

तस्वीरें भी पोस्ट की थीं। भारद्वाज ने सोशल मीडिया मंच पर नेताओं के साथ तस्वीरें भी साझा की हैं, जिनमें बिहार के मुज़्यमंत्री सम्राट चौधरी, दिल्ली के मंत्री कपिल मिश्रा और केंद्रीय मंत्री चिराग पासवान के साथ खींची गई तस्वीरें शामिल हैं। पासवान ने शुक्रवार को संवाददाताओं से कहा कि भारद्वाज ने उनके और दूसरे नेताओं के नाम का गलत इस्तेमाल किया। केंद्रीय खाद्य प्रसंस्करण उद्योग मंत्री ने कहा कि उन्होंने भारद्वाज के खिलाफ शिकायत दर्ज कराई है और उनके खिलाफ कार्रवाई की मांग की। पासवान ने कहा, ''आरोपी के जानलेवा हमले की बात कबूलने के बावजूद कोई कार्रवाई न होना एक गलत मिसाल कायम करता है। परिवार को न्याय दिलाने की जिज़्मेदारी मैं लेता हूं।'' कई पोस्ट में भरद्वाज की ऐसी तस्वीरें हैं जो कृत्रिम बुद्धिमज़ा (एआई) से बनी हुई लगती हैं, जिनमें वे बुर्का या हिजाब पहने महिलाओं के साथ दिख रहे हैं। भारद्वाज द्वारा 22 मई को पोस्ट की गई एक बेहद हिंसक तस्वीर में वह एक आदमी की खून से सनी ठुड्डी पकड़े हुए दिख रहे हैं। साथ इसमें 'मुगल' का संदर्भ देते हुए लिखा है, ''आ गया स्वाद'।'' भारद्वाज के इंस्टाग्राम अकाउंट को शुक्रवार को निष्क्रिय कर दिया गया जिसके करीब 1,84,000 अनुसरणकर्ता थे। भारद्वाज का 'एज़्स' पर भी एक प्रमाणित अकाउंट है, जिसके 6,400 से अधिक अनुसरणकर्ता हैं। भारद्वाज ने एज़्स अकाउंट पर अपने परिचय में लिखा है, '' आज के दौर का एक युवा जो अपने धर्म और राष्ट्र के खिलाफ कुछ भी बर्दाश्त नहीं कर सकता।'' कुमार पर कथित हमले का वीडियो जैसे ही तेजी से प्रसारित हुआ, सोशल मीडिया पर भारद्वाज के कई पुराने वीडियो भी सामने आने लगे।

इनमें से कुछ में उन्हें मुसलमानों और सरकार की आलोचना करने वालों के खिलाफ भड़काऊ बातें कहते हुए सुना जा सकता है। वहीं कुछ अन्य वीडियो में वह अपनी राजनीतिक पहुंच का जिक्र करते हुए शेखी बघारते और यह दावा करते दिखते हैं कि उन्हें गिरज़्तारी का कोई डर नहीं है। जिस ज़्लिप से वह चर्चा में आए, उनमें उन्होंने निशु के पिता का सिर फोड़ने की डींग मारी थी।

भारद्वाज कहते सुनाई दे रहे हैं, '' ज़्या आपको पता है कि यह अपराध किस धारा के तहत आता है? धारा 307। उसे 60 टांके लगे थे।

उस आदमी को गंभीर हालत में एज़्बुलेंस में ले जाया जा रहा था। उसकी बेटी पुलिस थाना के बाहर खड़ी होकर कह रही थी कि अगर उसके पिता को न्याय नहीं मिला, तो वह आत्महत्या कर लेगी।'' प्रसारित वीडियो पर वह कहते हुए सुनाई दे रहे हैं, ''लेकिन मुझे जेल भी नहीं भेजा गया। दुनिया को यह पता होना चाहिए।

मैं पूरी रात बाहर घूमता रहा।'' उन्होंने इसके बाद कई नेताओं का जिक्र करते हुए बताया कि उनके लिए चिंता करने की कोई खास वजह ज्यों नहीं है। भारद्वाज ने दावा किया, ''मुझ पर हनुमान जी का आशीर्वाद है। और दूसरी बात, कपिल मिश्रा मेरे बड़े भाई हैं।

कहा जाता है कि कपिल मिश्रा के फोन करने पर ही मुझे छोड़ा गया। चिराग पासवान भी मेरे बड़े भाई हैं। आप कितने नेताओं को जानते हैं?

ज़्या आप मोदी जी को जानते हैं? मोदी जी भी मेरे बड़े भाई हैं। मुझे सभी का समर्थन हासिल है।'' हालांकि, इस बात का कोई सबूत नहीं है कि भारद्वाज द्वारा उल्लेखित नेताओं ने इस मामले में उनकी तरफ से हस्तक्षेप किया था।

इस वीडियो ने भारद्वाज के खिलाफ कार्रवाई की मांग को और तेज कर दिया। कॉजपा ने शुक्रवार को दिल्ली में विरोध-प्रदर्शन के दौरान यह मुद्दा उठाया। पुलिस अधिकारियों ने बताया कि इसके बाद भारद्वाज का पता लगाने के लिए कई टीम तैनात की गईं।

बताया जाता है कि पुलिस गिरज़्त से बचने के लिए वह मोटरसाइकिल से नैथला गांव से खुर्जा की ओर भागे और इस दौरान संभवत- पहचान छिपाने के लिए हेलमेट पहना था। उन्हें बुलंदशहर में अंतत- हिरासत में लिया गया।

विविध समाचार

घरेलू उपचार

पित्त और कफ विकारों में गूलर का चमत्कार...

गोरासी परिवारी का सदस्य गूलर लंबी आयु वाला वृक्ष है। इसका वनस्पतिक नाम फीकुस ग्लोमेराता रौक्सबुर्गी है। यह सम्पूर्ण भारत में पाया जाता है। यह नदी-नालों के किनारे एवं दलदले स्थानों पर उगता है। इसके फल गोल, गुच्छों में लगते हैं। फल मार्च से जून तक आते हैं। कच्चा फल छोटा हरा होता है पकने पर फल मीठे, मुलायम तथा छोटे-छोटे दानों से युक्त होते हैं। इसका फल देखने में अंजीर के फल जैसा लगता है। इसके तने से क्षीर निकलता है। आयुर्वेदिक चिकित्सकों के अनुसार गूलर का कच्चा फल कसैला और दाहनाशक है। पका हुआ गूलर रुचिकारक, मीठा गूलर शीतल, पित्तशामक, तृषाशामक, श्रमहर, कब्ज मिटाने वाला तथा पौष्टिक है। इसकी जड़ में रक्तस्राव रोकने तथा जलन शांत करने का गुण है। गूलर के कच्चे फलों की सब्जी बनाई जाती है तथा पके फल खाए जाते हैं। इसकी छाल का चूर्ण बनाकर या अन्य प्रकार से उपयोग किया जाता है। गूलर के नियमित सेवन से शरीर में पित्त एवं कफ का संतुलन बना रहता है। इसलिए पित्त एवं कफ विकार नहीं होते। साथ ही इससे उदरस्थ अग्नि एवं दाह भी शांत होते हैं। पित्त रोगों में इसके पत्तों के चूर्ण का शहद के साथ सेवन भी फायदेमंद होता है।

मधुमेह में राहत: गूलर की छाल ग्राही है, रक्तस्राव को बंद करती है। साथ ही यह मधुमेह में भी लाभप्रद है। गूलर के कोमल-ताजा पत्तों का रस शहद में मिलाकर पीने से भी मधुमेह में राहत मिलती है। इससे पेशाब में शर्करा की मात्रा भी कम हो जाती है।

बवासीर में फायदेमंद: गूलर के तने का दूध बवासीर एवं दस्त के लिए श्रेष्ठ दवा है। खूनी बवासीर के रोगी को गूलर के ताजा पत्तों का रस पिलाना चाहिए। इसके नियमित सेवन से त्वचा का रंग भी निखरने लगता है।

बिवाई फटने पर: हाथ-पैरों की त्वचा फटने या बिवाई फटने पर गूलर के तने के दूध का लेप करने से आराम मिलता है, पीड़ा से छुटकारा मिलता है। गूलर से स्त्रियों की मासिक धर्म संबंधी अनियमितताएं भी दूर होती हैं। स्त्रियों में मासिक धर्म के दौरान अधिक रक्तस्राव होने पर इसकी छाल के काढ़े का सेवन करना चाहिए। इससे अत्याधिक बहाव रुक जाता है। ऐसा होने पर गूलर के पके हुए फलों के रस में खांड या शहद मिलाकर पीना भी लाभदायक होता है।

मुंह के छाले: मुंह के छाले हों तो गूलर के पत्तों या छाल का काढ़ा मुंह में भरकर कुछ देर रखना चाहिए। इससे फायदा होता है। इससे दांत हिलने तथा मसूढ़ों से खून आने जैसी व्याधियों का निदान भी हो जाता है। यह क्रिया लगभग दो सप्ताह तक प्रतिदिन नियमित रूप से करें।

जलने पर: आग से या अन्य किसी प्रकार से जल जाने पर प्रभावित स्थान पर गूलर की छाल को लेप करने से जलन शांत हो जाती है। इससे खून का बहना भी बंद हो जाता है। पके हुए गूलर के शरबत में शक्कर, खांड या शहद मिलाकर सेवन करने से गर्मियों में पैदा होने वाली जलन तथा तृषा शांत होती है।

नेत्र विकार: आंखों में पानी आना, जलन होना आदि के उपचार में भी गूलर उपयोगी है। इसके लिए गूलर के पत्तों का काढ़ा बनाकर उसे साफ और महीन कपड़े से छान लें। ठंडा होने पर इसकी दो-दो बूंद दिन में तीन बार आंखों में डालने से नेत्र ज्योति भी बढ़ती है। नकसीर फूटती हो तो ताजा एवं पके हुए गूलर के लगभग 25 मिली लीटर रस में गुड़ या शहद मिलाकर सेवन करने या नकसीर फूटना बंद हो जाती है। किसी भी दवा का सेवन डॉक्टर या वैद्य की सलाह से ही करें।

सेहतमंद रहने की अनोखी विधि

- अपनाएं गंडूषकर्म या ऑइल पुलिंग तकनीक
- शरीर से विषों को निकालने की आयुर्वेद विधि
- छोटे से छोटे, बड़े से बड़े और नए तथा पुराने रोगों से छुटकारा
- पश्चिमी जगत में बहुत लोकप्रिय, भारतीय नहीं जानते

मामूली से खर्च में हमेशा स्वस्थ और ऊर्जावान रहने की विधि है गंडूषकर्म या तेल चूषण विधि। मुख के अंदर तेल भरकर कुछ समय तक रखने या चूसने मात्र से अनेकानेक रोगों से छुटकारा मिल सकता है। यह बहुत पुरानी आयुर्वेद की चिकित्सा है जिसको आज सिर्फ कुछ गिने चुने लोग ही जानते है। आज पश्चिमी जगत इसको आइल पुलिंग थेरेपी के नाम से जानता है। आयल पुलिंग शरीर से विषों को निकाल डी टॉक्सिफाई करने की आसान सरल और सस्ती विधि है। छोटे से छोटे, बड़े से बड़े और नए तथा पुराने रोगों से छुटकारा दिलाने में बहुत अहम है यह प्रक्रिया। यह विधि आज पश्चिमी जगत में बहुत लोकप्रिय है, मगर दुर्भाग्य है कि भारत के लोग ही इसको नहीं जानते। आज हम आपको इसी विधि के बारे में बताएंगे। इससे शरीर विषमुक्त तो होगा ही साथ ही साथ नई ऊर्जा और रोग मुक्त हो कर आप बिल्कुल नया अनुभव करेंगे।

आश्चर्यजनक शोध

ऑइल पुलिंग को आयुर्वेद में गंडूषकर्म के नाम से जाना जाता है। इस तकनीक पर हाल के ही दिनों में कुछ शोधकर्ताओं ने शोध भी किए हैं और उनके परिणाम इतने सकारात्मक निकले हैं कि भरोसा करना मुश्किल है। कुछ रोगों में तो लाभ महज दो दिनों में ही सामने आ जाता है, जबकि कुछ में एक साल का समय लग जाता है।

आमतौर पर फायदे के लिए ऑइल पुलिंग तकनीक को कम से कम लगातार चालीस से पचास दिनों तक प्रयोग में लाए जाने के आवश्यकता होती है।

आइल पुलिंग की विधि

सवेरे उठकर मुंह साफ करने के बाद लेकिन नाश्ते से पहले एक बड़ा चम्मच 10 एमएल सूरजमुखी का तेल, या तिल का तेल, या मूंगफली का तेल लीजिए, इसको मुंह में भर लेने के बाद मुंह बंद रखकर उसे मुंह में घुमाए और दांतो से खींचे और ऐसा 15-20 मिनट तक करें। अन्य शब्दों में, तेल को चबाने की क्रिया करें। चबाते समय ठोड़ी को हिलाएं (थोड़े द्वारा दाना खाने के समान)। इससे अच्छी लार बनती है और मुख की श्लेष्मिक झिल्ली के माध्यम से रक्तदोष और विष खींच लिए जाते है। मुंह में तेल भरकर इस क्रिया को करने से 15-20 मिनट में तेल दूषित, पतला और सफेद हो जाता है। इसके बाद दूषित तेल को थूक दीजिए।

कुछ सावधानियां रखें

किसी भी हालत में इस जहरीले तेल को निगलना नहीं है। इसके बाद मुंह को अच्छी तरह धो लीजिए और दातुन या दंत मंजन कर लीजिये। आइल पुलिंग के बाद शरीर के जहरीले तत्व तेल के साथ मुंह में आ जाते है। यह चिकित्सा रोगी को अपने रोग अनुसार दिन में दो या तीन बार करनी चाहिए। ध्यान रहे यह करने से पहले पेट खाली ही हो, अर्थात भोजन के पहले ही करना है।

ताजे और पुराने रोग

ताजे रोग और प्रारंभिक चिकित्सा काल के संक्रमण 2 से 4 दिन में शीघ्रता से ठीक हो जाते हैं परंतु पुरानी बीमारियां ठीक होने में अधिक समय लग जाता है। अतः चिकित्सा प्रक्रिया छोड़नी नहीं चाहिए। प्रयोग के प्रारंभ में खासकर एक से अधिक रोग वाले रोगी की तकलीफें बढ़ सकती हैं। जैसे शरीर का तापमान बढ़ जाना इत्यादि। ऐसी स्थिति में घबराकर चिकित्सा नहीं छोड़ें। बिना किसी दखल के अपने आप सब ठीक हो जाता है। ऐसे लक्षण इस बात का सूचक हैं के रोग खत्म हो रहा है और चय अपचय बढ़ने से रोगी का स्वास्थ्य सुधर रहा है।

इन बीमारियों से छुटकारा

आइल पुलिंग से निरंतर स्वस्थ रहने की तो बल मिलता है। इसके इलावा जिन रोगों के ठीक होने का दावा विज्ञान भी करता है उनमें खास हैं दांतों की बीमारियां, मसूड़ों से खून का बहना, दांत दर्द, दांतो का पीलापन, पुराने रक्त रोग, झाइयां, झुर्रियां, सिरदर्द, श्वासनली की सूजन (ब्रोंकाइटिस), थ्रोम्बोसिस, हृदय रोग, गुर्दे और मूत्र संबंधी बीमारियां, पेट, फेफड़े और जिगर के रोग, अस्थिरोग, चर्मरोग, वायु रोग, पक्षाघात, अनिद्रा आदि। यह प्रक्रिया कैंसर में भी बहुत लाभदायक है।

ये हैं फायदे

आयल पुलिंग से विषैले ट्यूमर का बनना रुक जाता है और धीरे धीरे रोग समाप्त हो जाता है। इसके परिणाम से आंखों के नीचे काले घेरे मिट जाते हैं और ताजगी, स्फूर्ति, शक्ति, स्मरणशक्ति, बढ़ जाती है।

इंटरेस्टिंग फैक्ट

ब्रेन के हुनर की वजह से यात्रा के दौरान आती है मितली...

बस या कार में यात्रा करते हुए जी मचलना या उल्टी आना, ऐसी परेशानी बहुत लोगों को होती है। असल में ऐसा मस्तिष्क के जबरदस्त हुनर के चलते होता है। बस, कार, विमान या पानी के जहाज में यात्रा करने के दौरान शरीर और मस्तिष्क के बीच एक असमंजस की स्थिति बन जाती है। यात्रा के दौरान दिमाग को ऐसा लगता है जैसे शरीर में जहर फैल रहा है। जान बचाने के लिए मस्तिष्क हरकत में आता है। जी मचलने लगता है और उल्टी सी आने लगती है। इस तरह दिमाग शरीर से विषैले तत्वों को बाहर करने की कोशिश करता है। लेकिन दिमाग को ऐसे संकेत मिलते क्यों हैं? इसका कारण समझाते हुए डॉक्टर कहते है कि यात्रा के दौरान सीट पर बैठा इंसान स्थिर होता है लेकिन कान लगातार गति की आवाज मस्तिष्क तक पहुंचा रहे होते है। कान, दिमाग को बताते है कि हम गतिशील है। एक तरफ स्थिर शरीर होता है तो दूसरी तरफ गति से जुड़ी जानकारी। ऐसी परस्पर विरोधाभासी जानकारी मिलने पर मस्तिष्क को लगने लगता है कि कुछ गड़बड़ हो रही है।

कान के भीतर बैलेंस सेंसर

अगर आप पानी के जहाज में बैठे है और बाहर सब एक समान है तो आपकी आंखें गति की जानकारी नहीं देती हैं, लेकिन हमारे कानों में द्रवीय पदार्थ होते हैं जो भौतिक विज्ञान के सिद्धांतों पर चलते है। गति के दौरान ये द्रवीय पदार्थ गतिमान होते हैं। ऐसी स्थिति में मस्तिष्क को कई तरह के सिग्नल मिलते हैं। मांसपेशियां और आंखें बता रही होती हैं कि हम स्थिर है और कान के बैलेंस सेंसर कह रहे होते है कि हम गतिमान है। ये दोनों विरोधाभासी संकेत सही नहीं हो सकते। दिमाग को पता चल जाता है कि कुछ गड़बड़ है। लाखों साल के क्रमिक विकास के दौरान दिमाग यह सीख चुका है कि ऐसी गड़बड़ तभी होती है जब शरीर के भीतर विषैले तत्व आ जाएं। उनसे निपटने के लिए ब्रेन तुरंत हरकत में आता है और मितली सी आने लगती है या उल्टी होने लगती है।

कैसे बचें

यात्रा के दौरान आगे तरफ देखते हुए अगर आंखें खुली रखी जाएं तो काफी आराम मिलता है। असल में ऐसा करने से दिमाग को पता चलता है कि हम गतिमान हैं और वह इस तथ्य को स्वीकार कर लेता है और बचाव की मुद्रा में नहीं आता है। आम तौर पर बच्चों या कम सफर करने वालों को ऐसी समस्या सबसे ज्यादा होती है। बच्चों का दिमाग विकास कर रहा होता है, वह यात्रा करने का आदी नहीं होता, इसीलिए बचपन में ऐसी तकलीफ ज्यादा होती है लेकिन धीरे धीरे उम्र बढ़ने और यात्रा के बढ़ते अनुभव के साथ मस्तिष्क इसे समझ जाता है और तालमेल बैठा लेता है।

समाजशास्त्र में बेहतर करियर ...

मानव समाज के अध्ययन को समाजशास्त्र कहते हैं। भौगोलिक परिस्थितियों के अनुसार पूरी दुनिया में मनुष्य की सामाजिक संरचना बदल जाती है। हर समाज की अलग- अलग परंपराएं होती हैं। आधुनिकीकरण और बढ़ती सामाजिक जटिलताओं के कारण अब समाजशास्त्र के अंतर्गत चिकित्सा, सैन्य संगठन, जन संपर्क और वैज्ञानिक ज्ञान का भी अध्ययन किया जाता है। आर्थिक, राजनैतिक और सांस्कृतिक प्रणालियों सहित समाजशास्त्र की शुरुआत भी पश्चिमी देशों से ही हुई। समाजशास्त्र, समाज में रहने वाले लोगों से जुड़ा हुआ विषय है। सीधा समाज से जुड़ा होने के कारण आज के दौर में इसका बड़ा महत्व है। मौजूदा दौर में इसकी तुलना एमबीए से की जाती है। इसमें रोजगार की अपार संभावनाएं हैं। यह विषय न केवल साधारण है बल्कि रोचक भी है। समाज की जीवन में अहम भूमिका है और इसी समाज का अध्ययन इस विषय में किया जाता है। यही वजह है कि इस विषय का इतना महत्व है।

शैक्षणिक योग्यता

समाजशास्त्र में विशेषज्ञता हासिल करने के लिए कला संकाय में स्नातक होना आवश्यक है। इसके साथ सोशल साइंस, पोलिटिकल साइंस, इंटरनेशनल रिलेशन, साइकोलॉजी और ह्यूमेनिटी का व्यावहारिक ज्ञान होना जरूरी है। पोस्ट ग्रेजुएशन के बाद इसमें पीएचडी की जा सकती है।

समाज शास्त्र का इतिहास

ऐसा माना जाता है कि 14वीं शताब्दी के उत्तर अफ्रीकी अरब विद्वान इब्न खाल्दून प्रथम समाजशास्त्री थे, जिन्होंने सामाजिक एकता और सामाजिक संघर्ष के वैज्ञानिक सिद्धांतों को पहली बार उजागर किया। एक विषय के रूप में समाजशास्त्र की शुरुआत सबसे पहले 1890 में अमरीका के कंसास विश्वविद्यालय में हुई। 1891 ई. में कंसास विश्वविद्यालय में इतिहास और समाजशास्त्र विभाग की स्थापना की गई। समाजशास्त्र में अंतरराष्ट्रीय सहयोग 1895 में शुरू हुआ। 1905 में सारी दुनिया के पेशेवर समाजशास्त्रियों के संगठन की स्थापना हुई। एक विषय के रूप में समाजशास्त्र सर्वप्रथम 1890 में अमरीका के कंसास विश्वविद्यालय में पढ़ाया गया।

क्यों खास है समाजशास्त्र

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। बिना समाज के मनुष्य जीवन की कल्पना भी नहीं की जा सकती है। इस वजह से समाज का महत्व बढ़ा है और जरूरत बढ़ी है समाजशास्त्र की। समाजशास्त्र यह जानने के लिए जरूरी है कि जिन परिस्थितियों में हम रह रहे हैं, उनकी विसंगतियों को कैसे दूर किया जाए। इस तरह यह अपने पारंपरिक मूल्यों व बाहरी दुनिया के बीच संतुलन बनाने तथा व्यक्तिगत व सार्वजनिक क्रियाओं को पूरा करने का विवेक भी देता है। एक तरह से कहा जाए तो सभी तरह की नीतियों और रणनीतियों का संबंध मानव जीवन की उन्नति से जुड़ा होता है। इसलिए करियर के लिहाज से इस विषय का महत्व स्वतः ही बढ़ जाता है। मानव सभ्यता, संस्कृति, सोसायटी, जातीयता और सामाजिक संगठन आदि की जानकारी से हम अपने वर्तमान को अधिक बेहतर बना सकते हैं।

रोजगारपरक है विषय

देश में नए उद्योग, विद्युत प्रोजेक्ट और सीमेंट कारखाने लग रहे हैं। यहां पर इस विषय के जानकारों की जरूरत है। यह एक प्रोफेशनल विषय है। यदि आपको नौकरी नहीं करनी है तो आप एनजीओ बनाकर समाजसेवा कर सकते हैं। कंपनियां जहां अपना प्रोजेक्ट लगाती है, वहां श्रमिकों के पुनर्वास के लिए योजना बनाने के लिए समाजशास्त्रियों की मदद लेती है। वर्तमान परिपेक्ष्य को देखते हुए यह करियर ज्यादा रोजगारपरक है। स्कूलों और कालेजों में इस विषय की काफी डिमांड होने से इस का महत्व बढ़ता जा रहा है। इसके अलावा कई गैर सरकारी संगठन भी हैं, जिनमें समाजशास्त्रियों की बहुत डिमांड रहती है।

रोजगार के अवसर

आज दुनिया में हजारों की संख्या में स्वयंसेवी संस्थाएं, मानवीय, सामाजिक, पर्यावरण संबंधी समस्याओं के समाधान में जुटी हुई हैं और इसी कारण संस्थानों को बड़ी संख्या में ऐसे लोगों की आवश्यकता है, जिनमें न केवल सेवा का जज्बा हो, अपितु संबंधित क्षेत्र की जानकारी भी हो। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर काम करने वाली संस्थाएं जैसे यूनीसेफ, रेडक्रॉस तो हर वर्ष समाजशास्त्र एवं समाज कार्य में विशेषज्ञों की खोज में बड़े-बड़े शहरों में सेमिनार का आयोजन करती हैं। इन संस्थाओं में निदेशक, प्रोग्राम आफिसर, टीम लीडर जैसे उच्च पदों पर अच्छे वेतनमान के साथ नियुक्ति दी जाती है। इसके अलावा अन्य कई क्षेत्र ऐसे हैं, जहां छात्रों को को.ऑर्डिनेटर, सर्वे आफिसर या पब्लिक रिलेशन आफिसर जैसे उच्च पदों पर कार्य करने का मौका मिलता है। अपराध विज्ञान और सुधारात्मक प्रशासन में विशेषज्ञता रखने वाले सामाजिक कार्यकर्ता, जेल, सुधारगृहों, बालगृहों जैसे स्थानों में भी रोजगार के अवसर उपलब्ध हैं।

शिक्षण संस्थान

- बरकतउल्ला विश्व विद्यालय भोपाल
- देवी अहिल्या विवि इंदौर
- हिमाचल प्रदेश यूनिवर्सिटी, शिमला
- पंजाब यूनिवर्सिटी, चंडीगढ़
- कर्नाटक यूनिवर्सिटी हुबली,धरवाड़ (कर्नाटक)
- जम्मू यूनिवर्सिटी, जम्मू
- कुरुक्षेत्र यूनिवर्सिटी, कुरुक्षेत्र

विभिन्न कोर्सेज

अप्लाइड सोशोलॉजी
सोशोलॉजी ऑफ रिलीजन
इकॉनोमिक सोशोलॉजी
पोलिटिकल सोशोलॉजी
सोशोलॉजी ऑफ किनशिप

समाजशास्त्र के उद्देश्य

- सामाजिक जीवन में आ रहे परिवर्तनों की पहचान करना।
- समाज से अंधविश्वास एवं नकारात्मक सोच को दूर करने का प्रयास
- समाज विशेषताओं की पहचान कर मानवता को एकसूत्र में बांधने का प्रयास

रेसिपी

मलाई कोफ्ता

सामग्री

कोफ्ता सामग्री: 200 ग्राम उबले आलू, 200 ग्राम पनीर, 1/2 चम्मच लाल मिर्च, 100 ग्राम मकई आटा, 1/2 चम्मच गरम मसाला, 1 चम्मच नमक, 1 चम्मच धनिया, 1/2 चम्मच हरी मिर्च, काजू, **ग्रेवी सामग्री:** 50 मि.ली. जैतून तेल, 4 लौंग, 1 इलायची और दालचीनी, 3/4 चम्मच काली मिर्च, 1 चम्मच अदरक-लहसुन पेस्ट, 150 ग्राम प्याज, गरम मसाला, 1 चम्मच लाल मिर्च, 1/2 चम्मच हल्दी, 100 ग्राम काजू, 100 ग्राम टमाटर, 50 मि.ली. जल, 50 मि.ली. दही, 1 चम्मच हरी मिर्च, 100 मि.ली. टमाटर, 50 मि.ली. क्रीम

विधि

एक बर्तन में उबले आलू,पनीर,लाल मिर्च पाउडर, मकई का आटा, गरम मसाला,नमक,धनिया, हरी मिर्च आदि को अच्छी तरह से मिक्स कर लें। तैयार किए मिश्रण का एक छोटा सा हिस्सा लेकर इसको कोफ्ते का आकार दें और सुनहरा भूरा होने तक भून लें। फिर इसे निकालकर कागज पर रख लें। अब एक पैन में जैतून का तेल डालकर गर्म कर लें और इसमें लौंग, बड़ी इलायची, दालचीनी, हरी इलायची, काली मिर्च डालकर कर चलाए। इन रंग सुनहरा होने तक इसमें अदरक और लहसुन का पेस्ट, प्याज डालें। फिर इसमें नमक, गरम मसाला,लाल शिमला मिर्च,चम्मच हल्दी पाउडर डाल कर मिक्स कर लें। इसके बाद काजू,टमाटर और पानी डालकर 5 मिनट तक पकने दें। जब तक यह सामग्री अच्छे से मिक्स हो जाए इसको ब्लेंड कर दें। अब एक पैन लेकर उसमें जैतून का तेल डालकर हरी मिर्च, टमाटर प्यूरी को भूनें। इसके बाद पैन में पानी डालकर 5-10 मिनट के लिए पकने दें। इसमें ताजा क्रीम और तले हुए कोफ्ते अच्छी तरह से मिश्रित करें। मलाई कोफ्ता तैयार होने के बाद इसको धनिया के साथ गार्निश करें।

मिनी अनियन समोसा

सामग्री

आटे के लिए: 1/2 कप मैदा, 1 स्पून तेल, नमक स्वादअनुसार, **भरवां मिश्रण के लिए:** 1 कप प्याज, 2 मिली तेल, 1/2 स्पून जीरा, नमक स्वादअनुसार, 1 स्पून लाल मिर्च पाउडर, 1/2 स्पून गरम मसाला, 1/2 स्पून अमचुर, 1/4 स्पून हल्दी पाउडर, 2 स्पून कटा हुआ हरा धनिया, 1 स्पून बेसन, **अन्य सामग्री:** तलने के लिए तेल, परोसने के लिए: टमैटो कैचप, हरी चटनी

विधि

आटे के लिए: सभी सामग्री को एक गहरे बाउल में डालकर जरूरत मात्रा में पानी का प्रयोग कर सख्त आटा गूंथ लें। एक तरफ रख दें। **भरवां मिश्रण के लिए:** एक चौड़े नॉन-स्टिक पैन में तेल गरम करें और जीरा डालें। जब बीज चटकने लगे, प्याज और नमक डालकर मध्यम आंच पर 2 मिनट तक भून लें। आंच से हटाकर, लाल मिर्च पाउडर, गरम मसाला, अमचुर, हल्दी पाउडर, धनिया और बेसन डालकर अच्छी तरह मिला लें। एक तरफ रख दें। आटे को नरम होने तक गूंथ लें और 20 भाग में बांट लें। आटे के एक भाग को 75 मिमी। आकार में बेल लें। गोले को चाकू से 2 भाग में तिरछा काट लें। एक भाग को निकालकर कोन के आकार में मोड़कर पानी से चिपका लें। कोन को 1 टी-स्पून भरवां मिश्रण से भरें और किनारों पर थोड़ा पानी लगाकर चिपका लें। बचे हुए आटे और भरवां मिश्रण का प्रयोग कर 19 और मिनी समोसे बना लें। एक गहरी नॉन-स्टिक कढ़ाई में तेल गरम करें, समोसे डालकर, मध्यम आंच पर उनके सभी तरफ से सुनहरा होने तक तल लें। तेल सोखने वाले कागज पर निकाल लें। टमैटो कैचप और हरी चटनी के साथ तुरंत परोसें।

कलिंग समाचार

संपादकीय

विदेश नीति में नाकामी के कुछ और उदाहरण

प्रधानमंत्री मोदी भारत की विदेश नीति और विदेशों में भारत की साख को बचाने में किस कदर नाकाम हो चुके हैं, इसके कुछ और उदाहरण सामने आए हैं। एशियाई विकास बैंक या एशियन डेवलपमेंट बैंक (एडीबी) ने पाकिस्तान के लिए 668 करोड़ रुपये के पैकेज को मंजूरी दी है। पाकिस्तान को ये रुपये राजकोषीय स्थिति को बेहतर करने और सार्वजनिक वित्तीय प्रबंधन में सुधार के लिए दिए जा रहे हैं। पाकिस्तान में एडीबी की डायरेक्टर ए मा फैन ने कहा कि पाकिस्तान ने मैक्रोइकोनॉमिक परिस्थितियों में सुधार के मामले में महत्वपूर्ण प्रगति की है। ओसियां और जोधपुर एडीबी का यह फैसला तब आया है जब दो दिन पहले ही प्रधानमंत्री मोदी ने एडीबी के अध्यक्ष मसातो कांडा से अपने आधिकारिक निवास पर मुलाकात की थी और इस बारे में सोशल मीडिया पर लिखा था कि- मसातो कांडा के साथ एक शानदार बैठक हुई, जिसमें हमने कई मुद्दों पर अपने विचार साझा किए। पिछले दशक में भारत के तेजी से हुए परिवर्तन ने अनगिनत लोगों को सशक्त बनाया है और हम इस यात्रा में और गति लाने के लिए काम कर रहे हैं। वहीं मसातो कांडा ने विकसित भारत 2047 के लक्ष्य को साहसिक बताते हुए लिखा था कि हम अगले पांच वर्षों में नगर निगम के इन्फ्रास्ट्रक्चर के विकास, मेट्रो नेटवर्क का विस्तार, नए रीजनल रैपिड ट्रांजिट सिस्टम कॉरिडोर बनाने और शहर की सेवाओं के आधुनिकीकरण में थर्ड पार्टी कैपिटल सहित 10 अरब डॉलर का निवेश करेंगे। दो दिन पहले ऐसी खबरें देख कर भ्रम हो सकता था कि अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष ने हमारी बात नहीं सुनी, कम से कम एशियाई विकास बैंक भारत के साथ खड़ा रहेगा और पाकिस्तान को वित्तीय मदद नहीं देगा। लेकिन यहां फिर भारत की कूटनीति बुरी तरह नाकाम दिखी। श्री मोदी से मिलकर भले ही भारत में निवेश की बातें हुई हों, लेकिन इसके फौरन बाद पाकिस्तान को भी बड़ी मदद देकर एडीबी ने बता दिया कि उसका रवैया भी वही है जो पश्चिमी देशों और संस्थाओं का है। पिछले महीने वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने भी एडीबी अध्यक्ष मसातो कांडा से मुलाकात कर अपील की थी कि पाकिस्तान की मदद न की जाए, क्योंकि वह आतंकवाद का पोषण करता है। इसके अलावा भारत कोशिश कर रहा है कि फाइनेंशियल एक्शन टास्क फोर्स में पाकिस्तान का नाम ग्रे सूची में डलवाया जाए, इसके लिए यूरोपीय देशों को साथ लाने की कोशिश हो रही है। अब इसमें भारत कामयाब होता है या नहीं, ये कहा नहीं जा सकता। लेकिन पहले आईएमएफ और अब एडीबी के फैसलों ने भारत की कोशिश को झटका तो दे ही दिया है। वहीं पाकिस्तान अब अमेरिका, रूस, चीन तमाम बड़ी शक्तियों का करीबी बनने की कोशिश में लगा है। अमेरिका और चीन तो पहले ही भारत के ऊपर पाकिस्तान को तवज्जो दे सकते हैं, अगर रूस में पाकिस्तान अपने लिए जगह बना लेता है, तब भारत की साख पर जो बट्टा लग सकता है, उसका अंदाज सरकार को कर लेना चाहिए। हालांकि मौजूदा रवैया देखकर लगता नहीं कि सरकार को कूटनीति या विदेश नीति की कोई परवाह है। पाठक जानते हैं कि राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप लगातार बयान दोहरा रहे हैं कि उन्होंने व्यापार की धमकी देकर युद्ध विराम करवाया है। लेकिन अब तक प्रधानमंत्री मोदी ने इस पर सीधे कोई खंडन नहीं किया है। अपना पक्ष रखने के लिए जो प्रतिनिधिमंडल 33 देशों की यात्रा पर भेजे गए थे, उनके नतीजे भी कुछ खास नजर नहीं आ रहे। क्योंकि इसमें सरकार की मंशा ही साफ नहीं थी कि आखिर वह प्रतिनिधिमंडलों के जरिए क्या हासिल करना चाहती थी। अगर मकसद विदेशों से समर्थन हासिल करना था, तो फिर इन मंडलों के सदस्यों की मुलाकात हरेक देश में नीति निर्माताओं से होनी चाहिए थी, जहां उन्हें आश्वासन मिलता कि वे पाकिस्तान की जमीन से संचालित आतंकी गतिविधियों का विरोध करेंगे, लेकिन एकाध देश छोड़कर अधिकतर देशों में प्रतिनिधिमंडल में गए सदस्यों ने कहीं थिंक टैंक के लोगों से मुलाकात की या फिर पूर्व मंत्री, पूर्व राजनयिक, पूर्व अधिकारी के साथ बैठकें कीं। इसमें भी एक वीडियो सामने आया जब एक प्रतिनिधिमंडल की सदस्या रेखा शर्मा खाने की मेज़ पर गीत गाते दिखीं और बाकी लोग तालियां बजा रहे थे।

गहराई से समझना होगा अमेरिका-ईरान-इजरायल विवाद को

वाप्पला बालाचंद्रन

1980 के दशक के दौरान ईरान ने अमेरिका को बार-बार झटका दिया जिससे उसे दबाव में बातचीत करने के लिए मजबूर होना पड़ा। 23 अक्टूबर 1983 को लेबनानी गृहयुद्ध में हस्तक्षेप के लिए पहुंचे अमेरिकी समुद्री जहाज %पीसकीपर्स% को एक ईरानी आत्मघाती हमलावर इस्माइल अस्करी ने ट्रक बम से उड़ा दिया जिसमें 241 अमेरिकी नौसैनिक मारे गए। इस हमले में 18,000 पाउंड विस्फोटकों का इस्तेमाल किया गया था। कई दिनों तक दुनिया यह अनुमान लगाती रही कि क्या अमेरिका इजरायल-ईरान हवाई युद्ध में शामिल होगा या नहीं। राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्र प ने आखिरकार 22 जून को नाटकीय तरीके से ईरान को दी अपनी धमकियों पर अमल किया। ट्र प लगातार %मैं यह कर सकता हूं, मैं ऐसा नहीं कर सकता% जैसी भ्रम फैलाने वाली बातें कर अनिश्चितता का माहौल बना रहे थे लेकिन उस दिन अमेरिकी वायु सेना और नौसेना ने बंकर बस्टर बम तथा टॉमहॉक मिसाइलों का उपयोग कर ईरान के फोर्डो, नतांज व इस्फ़हान परमाणु सुविधा केंद्रों पर हमला कर दिया। इजरायल-ईरान युद्ध में पहले से ही दोनों देशों में कई मौतें हो चुकी हैं और बुनियादी ढांचे को बहुत नुकसान पहुंच चुका है। इसके तुरंत बाद ट्र प ने यह घोषणा करके शांति दूत के वस्त्र धारण कर लिए कि ईरान और इजरायल दोनों 12-दिवसीय संघर्ष के विराम के लिए सहमत होंगे जिसमें अमेरिका को शामिल होने के लिए मजबूर किया गया था। फिलहाल संघर्ष विराम जारी है। हालांकि एक समय था जब अमेरिका मध्य पूर्व में ईरान के हमलों की जांच करने में असहाय था। इसकी शुरुआत 14 फरवरी 1979 को तेहरान दूतावास की घेराबंदी से हुई थी जब उनके 52 कर्मचारियों को एक वर्ष से अधिक समय तक बंधक बनाकर रखा गया था। उस अवधि के दौरान कोई भी बड़ी शक्ति, यहां तक कि इजरायल भी वाशिंगटन डीसी और अयातुल्ला रूहोल्लाह खुमैनी शासन के बीच मध्यस्थता करने में मदद करने को तैयार नहीं था। अवर्गीकृत सोवियत दस्तावेजों से पता चला कि तब अफगानिस्तान के घटनाक्रम से चिंतित सोवियत नेतृत्व को यह भी डर था कि अमेरिका शाह राजशाही के पतन को रोकने के लिए सैन्य हस्तक्षेप करेगा। यद्यपि मास्को को विश्वास था कि खुमैनी शासन अमेरिकी प्रभाव को समाप्त कर देगा। 1979 से तेहरान में तैनात केजीबी अधिकारी लियोनिद शेबर्शिन ने अपने संस्मरणों में कहा था कि उनके प्रमुख यूरी एंड्रोपोव को कोई भरोसा नहीं था कि खुमैनी क्रांति सोवियत योजनाओं के अनुसार आगे बढ़ेगी। शेबर्शिन ने यह भी दावा किया कि उनके पास सबूत हैं कि 24 अप्रैल 1980 को ऑपरेशन ईगल क्लॉ के माध्यम से बंधकों को बचाने के लिए अमेरिका के असफल प्रयास में तेहरान में शासन परिवर्तन के लिए अधिक दूरगामी उद्देश्य थे। क्या ट्र प अब ऐसा करने का प्रबंध करेंगे? थॉमस एल. फ्रीडमैन (न्यूयॉर्क टाइ स, 22 नवंबर, 1986) के अनुसार, इजरायल 1979 में खुमैनी सरकार से जुड़ने के लिए एक चैनल खोलने के लिए क्रांतिकारी तेहरान में ईरानी सेना के कुछ वरिष्ठ अधिकारियों और क्रांतिकारी तेहरान के अन्य तत्वों के साथ अपनी खुफिया जानकारी के माध्यम से संबंध बनाने में व्यस्त था। यह ईरानी यहूदियों को देश से बाहर निकालने के लिए निहित ईरानी सहयोग हासिल करना था। फ्रीडमैन ने कहा कि -इजरायल के तत्कालीन प्रधानमंत्री मेनाचेम बिगिन ने तेहरान को थोड़ी मात्रा में हथियार व स्पेयर पार्ट्स भेजने शुरू किये। हालांकि उन्होंने कहा कि इजरायल के इस तर्कका अमेरिका समर्थन नहीं करता है कि वाशिंगटन को हथियारों के सारे हस्तांतरण के बारे में सूचित किया गया था और उसने इसका मौन रूप से अनुमोदन किया था%। फ्रीडमैन ने महसूस किया कि खुमैनी शासन के एक वर्ग के साथ इजरायल के संबंध ईरान में यहूदियों को चरमपंथियों के गुस्से से बचाने की एक सामरिक चाल थी तथा 1980 के दशक के मध्य में अपने ईरानी सैन्य संपर्कों के विलुप्त हो जाने से पहले कुछ उपयोगी खुफिया जानकारी हासिल कर सकते थे। 29 जनवरी, 2025 को राणा नेजाद ने इसकी पुष्टि की थी जिन्होंने पहले द वाशिंगटन पोस्ट के साथ काम किया था। उन्होंने कहा कि रिकॉर्ड से पता चलता है कि दोनों देशों ने महसूस किया कि गुप्त संबंध बनाए रखना रणनीतिक रूप से फायदेमंद होगा। परिणामस्वरूप शाह मोह मद रजा पहलवी के पतन के बाद तेहरान ने सार्वजनिक रूप से इजरायल के अस्तित्व के अधिकार से इनकार कर दिया था, फिर भी ईरान और इजरायल प्रति वर्ष लाखों डॉलर के व्यापार में संलग्न रहे। नेजाद के अनुसार इस गुप्त गठबंधन में कई कारणों का योगदान था। खुमैनी शासन को %दुनिया की छठी सबसे बड़ी सेना, विदेशी भंडार में 26 अरब डॉलर, एक दिन में 105 लाख डॉलर का तेल उत्पादन करने वाला तेल उद्योग और इजरायल के साथ घनिष्ठ संबंध विरासत में मिला था। इजिप्त के राष्ट्रपति गमाल नासिर और सोवियत संघ से सुरक्षा खतरों के कारण शाह ने इजरायल के साथ घनिष्ठ संबंध बनाए थे। यद्यपि खुमैनी ने शाह की सेना को 60 प्रतिशत तक शुद्ध कर दिया लेकिन वे चाहते थे कि इस गुप्त गठबंधन को बनाए रखा जाए क्योंकि उन्हें सितंबर 1980 और अगस्त 1988 में लड़े गए ईरान-इराक युद्ध के दौरान इराक का सामना करने में इजरायल की मदद की जरूरत थी। नेजाद का कहना है कि 1985 तक इजरायल सरकार और निजी हथियार डीलरों द्वारा बुक किए गए चार्टर्ड डेनिश मालवाहक जहाजों ने फारस की खाड़ी के माध्यम से बंदर अब्बास के ईरानी बंदरगाह तक अमेरिकी निर्मित हथियार ले जाने के लिए 600 से अधिक यात्राएं की थीं। जब तक युद्ध जारी रहा, इजरायल ने ईरानी सैन्य विमानों की उड़ानें जारी रखी और इजरायली सैन्य प्रशिक्षक इस्लामी गणराज्य के सेना कमांडरों को प्रशिक्षित करते रहे। इस संबंध में द टाइ स ऑफ इजरायल (14 जून, 2024) ने राष्ट्रीय ईरानी अमेरिकी परिषद के संस्थापक और पूर्व अध्यक्ष त्रिता पारसी के हवाले से एक नया आयाम जोड़ा कि इजरायल ने 1981 के ऑपरेशन ओपेरा से पहले ईरानियों से मूल्यवान खुफिया जानकारी प्राप्त की जो इराक की परमाणु महत्वाकांक्षाओं की आधारशिला ओसिरक परमाणु रिएक्टर का विनाश का कारण बना था। चालीस साल बाद इजरायल अब ईरान की परमाणु परियोजनाओं को नष्ट करने की कोशिश कर रहा है। 1980 के दशक के दौरान ईरान ने अमेरिका को बार-बार झटका दिया जिससे उसे दबाव में बातचीत करने के लिए मजबूर होना पड़ा। 23 अक्टूबर 1983 को लेबनानी गृहयुद्ध में हस्तक्षेप के लिए पहुंचे अमेरिकी समुद्री जहाज पीसकीपर्स को एक ईरानी आत्मघाती हमलावर इस्माइल अस्करी ने ट्रक बम से उड़ा दिया जिसमें 241 अमेरिकी नौसैनिक मारे गए। इस हमले में 18,000 पाउंड विस्फोटकों का इस्तेमाल किया गया था। एफबीआई ने इस विस्फोट को द्वितीय विश्व युद्ध के बाद से पृथ्वी पर सबसे बड़ा गैर-परमाणु विस्फोट निरुपित किया था। इसके कुछ मिनट बाद हुए एक और आत्मघाती बम विस्फोट में 58 फ्रांसीसी सैनिक मारे गए। नतीजतन राष्ट्रपति रोनाल्ड रीगन को लेबनान से अमेरिकी नौसैनिकों को वापस लेने के लिए मजबूर होना पड़ा। वर्षों बाद 26 सितंबर 1983 को या उसके आसपास अमेरिकी राष्ट्रीय सुरक्षा एजेंसी (एनएसए) ने एक ऐसा संदेश पकड़ लिया था जिसमें ईरानी खुफिया मु यालय द्वारा दमिश्क में तत्कालीन ईरानी राजदूत अली अकबर मोहताशमी को एक मौखिक निर्देश था जिसमें उन्हें आतंकवादी समूह इस्लामिक अमल के नेता हुसैन मुसावी को अमेरिकियों के खिलाफ असाधारण कृत्य करने का निर्देश देने के लिए कहा गया था। यह बात 2003 में अमेरिका में एक अदालत के मुकदमे के दौरान सामने आयी थी। लेबनान गृहयुद्ध के दौरान 1982 में इस्लामिक जिहाद-हिजबुल्लाह ने लगभग 104 विदेशी नागरिकों का अपहरण कर लिया जिनमें ज्यादातर अमेरिकी और पश्चिम यूरोपीय नागरिक थे। इस बंधक संकट ने अमेरिकी राष्ट्रपति रीगन को ईरान के साथ बातचीत करने के लिए मजबूर किया। बंधकों में सीआईए स्टेशन प्रमुख विलियम बकले और नौसेना कर्नल विलियम हिगिंस थे जिन्हें मौत के घाट उतार दिया गया था। इनमें से कुछ बंधकों की रिहाई ईरान-कॉन्ट्रा अफेयर के विषय में थी जिसने रीगन प्रेसीडेंसी को इजरायल के माध्यम से ईरान को हथियार बेचने के लिए गुप्त रूप से सहमत होने और सैंडिनिस्टा विरोधी विद्रोहियों (कॉन्ट्रास) को निधि देने के लिए मजबूर कर दिया जिसे अमेरिकी कांग्रेस ने %बोलैंड संशोधन% के माध्यम से प्रतिबंधित कर दिया था। इसका उद्देश्य निकारागुआ सरकार का विरोध करने वाले विद्रोहियों को मिलने वाली सीआईए फंडिंग को रोकना था। बंधक घटना ने रीगन सरकार को हिला दिया था। ये सारी बातें ब्रिटिश राजनेता और राजनीतिज्ञ लॉर्ड पामर्स्टन के शब्दों को सही साबित करते हैं जिन्होंने कहा था कि %एक राष्ट्र का कोई स्थायी मित्र या दुश्मन नहीं होता है, केवल स्थायी हित होते हैं।

एससीओ की बैठक में भारत कूटनीतिक रुप से अलग-थलग पड़ गया

नित्य चक्रवर्ती

स्वाभाविक रूप से, श्री सिंह ने इस एकतरफा घोषणापत्र पर हस्ताक्षर नहीं किये। एससीओ में नियम यह है कि हर प्रस्ताव सर्वस मति के आधार पर होना चाहिए। इसलिए भारत की आपत्ति के परिणामस्वरूप, संयुक्त बयान जारी नहीं किया जा सका। पाकिस्तान खुश है कि भारत ने हस्ताक्षर नहीं किये। इसलिए यह इस्लामाबाद के लिए एक कूटनीतिक जीत थी।

चीन के क़िंगदाओ शहर में 25 और 26 जून को शंघाई सहयोग संगठन (एससीओ) के रक्षा मंत्रियों की बैठक में भारत का कूटनीतिक रूप से अलग-थलग पड़ जाना स्पष्ट रूप से दिखा, जब एक संयुक्त बयान तैयार किया गया, जिसमें सदस्यों से आतंकवाद से मिलकर लड़ने का आह्वान किया गया, लेकिन बलूचिस्तान में हमलों का उल्लेख तो किया गया परन्तु 22 अप्रैल को पहलगाम में हुई आतंकी हत्याओं का कोई उल्लेख नहीं किया गया।

ओसियां और जोधपुर 2025 शिखर स मेलन के मेजबान देश चीन की अध्यक्षता में हुई बैठक में भारत और पाकिस्तान सहित सदस्यों के बीच चर्चा के बाद संयुक्त बयान तैयार किया गया। पहलगाम हत्याकांड और उसके बाद ऑपरेशन सिंदूर के जरिये पाकिस्तान में आतंकी शिविरों को ध्वस्त करने की भारत की कार्रवाई पर केंद्रित विचार-विमर्श के दौरान भारतीय रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने आतंकवाद के खिलाफ जोरदार तरीके से बात की।

लेकिन अंतिम दिन संयुक्त बयान में पहलगाम आतंकवाद पर भारत के दृष्टिकोण को शामिल नहीं किया गया, जबकि बलूचिस्तान पर पाकिस्तान के दृष्टिकोण को शामिल किया गया।،द्यह्यश ऋद्गडुस्र - आपातकाल और शरद यादव! स्वाभाविक रूप से, श्री सिंह ने इस एकतरफा घोषणापत्र पर हस्ताक्षर नहीं किये।

एससीओ में नियम यह है कि हर प्रस्ताव सर्वस मति के आधार पर होना चाहिए। इसलिए भारत की आपत्ति के परिणामस्वरूप, संयुक्त बयान जारी नहीं किया जा सका। पाकिस्तान खुश है कि भारत ने हस्ताक्षर नहीं किये। इसलिए यह इस्लामाबाद के लिए एक कूटनीतिक जीत थी, जो पहलगाम हत्याकांड और ऑपरेशन सिंदूर के बाद वैश्विक राय को प्रभावित करने के लिए भारत के साथ धारणा की लड़ाई में लगा हुआ है। एससीओ में वर्तमान में दस सदस्य हैं- चीन, रूस, भारत, पाकिस्तान, ईरान, बेलारूस, कजाकिस्तान, किर्गिस्तान, ताजिकिस्तान और उज्बेकिस्तान। भारतीय अधिकारियों ने दावा किया कि बयान चीन द्वारा पाकिस्तान के पक्ष में दिया गया था। ठीक है। यह सच हो सकता है। लेकिन फिर रूस सहित अन्य सात सदस्यों का क्या? यह हमारे विदेश मंत्रालय की सरासर की विफलता थी कि एससीओ के सभी मध्य एशियाई सदस्य देश भारत के समर्थन में नहीं आये। यहां तक कि रूस ने भी भारतीय दृष्टिकोण को शामिल करने के लिए बयान में संशोधन करने में हस्तक्षेप नहीं किया। एससीओ के कुल दस सदस्यों में से भारत को छोड़कर कोई भी अन्य देश बयान के खिलाफ नहीं था।

यह स्पष्ट रूप से पाकिस्तान के पक्ष में 9-1 था। इस साल के अंत में चीन के तियानजिन में एससीओ शिखर स मेलन आयोजित किया जायेगा। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी एससीओ शिखर स मेलन में भाग लेंगे, ऐसा कहा जाता है। वे वहां चीनी राष्ट्रपति शी जिनपिंग, रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन, पाकिस्तान के प्रधानमंत्री शहबाज शरीफ और अन्य नेताओं से मिलेंगे। रक्षा मंत्रियों की हालिया बैठक की तरह इस शिखर स मेलन में भी आतंकवाद से लड़ने का मुद्दा उठेगा। भारत के प्रधानमंत्री यह सुनिश्चित करने के लिए क्या करने जा रहे हैं कि शिखर स मेलन की घोषणा में अंततः भारतीय दृष्टिकोण शामिल हो? इस साल के अंत में एससीओ शिखर स मेलन से पहले, 6 और 7 जुलाई को ब्राजील में ब्रिक्स शिखर स मेलन आयोजित किया जायेगा। भारतीय प्रधानमंत्री उसमें भाग लेंगे।

उस बैठक में भी आतंकवाद के खिलाफ लड़ाई का मुद्दा उठेगा। पाकिस्तान ब्रिक्स का सदस्य नहीं है। इस तरह क़िंगदाओ बैठक में इस्लामाबाद की ओर से जो दबाव था, वह ब्राज़ील शिखर स मेलन में नहीं होगा। लेकिन हर देश ने कोई न कोई रुख़ अपनाया है और यह अचानक नहीं बदलता। इसके लिए लगातार समझाने और तथ्यों को पेश करने की ज़रूरत होती है। क़िंगदाओ बैठक में राजनाथ सिंह और उनकी टीम एससीओ के सदस्यों को समझाने में पूरी तरह विफल रही। ब्राज़ील शिखर स मेलन में ऐसा नहीं दोहराया जाना चाहिए। ब्रिक्स शिखर स मेलन में अब बस कुछ ही दिन बचे हैं।

इन आठ दिनों में भारतीय राजनयिकों को सदस्य देशों से मिलकर उन्हें भारत के ख़िलाफ़ आतंकी हमलों में पाकिस्तान की संलिप्तता के बारे में पूरे तथ्यों के साथ भारतीय स्थिति के बारे में समझाने का पूरा प्रयास करना होगा।

ब्राज़ील और दक्षिण अफ्रीका प्रमुख सदस्य हैं। शिखर स मेलन में किसी भी तरह की शर्मिंदगी से बचने के लिए उन्हें उचित जानकारी दी जानी चाहिए। इस साल के अंत में होने वाले एससीओ शिखर स मेलन के बारे में, क्षेत्र की सुरक्षा और अर्थव्यवस्था दोनों के दृष्टिकोण से विचार-विमर्श बेहद महत्वपूर्ण होगा। अब अपने 25वें वर्ष में एससीओ अपने मूल छह संस्थापक सदस्यों से बढ़कर 10 सदस्य देशों, दो पर्यवेक्षक देशों और 14 संवाद भागीदारों के बड़े परिवार में बदल गया है - जो पूर्वी यूरोपीय मैदानों से लेकर हिंद महासागर और प्रशांत रिम तक फैला हुआ है, और जिसमें दुनिया की लगभग आधी आबादी शामिल है। एससीओ सूत्रों का कहना है कि यह संगठन क्षेत्रीय सुरक्षा सहयोग के लिए एक परिपक्व मंच बन गया है, जिसका प्रभाव, सामंजस्य और अपील लगातार बढ़ रही है। पिछले 25 वर्षों में, यह सुरक्षा का विशाल जहाज आतंकवाद, अलगाववाद और उग्रवाद के खिलाफ लहरों पर सवार होकर क्षेत्रीय सुरक्षा में उत्कृष्ट योगदान दे रहा है। सुरक्षा सहयोग से उभरने वाले आर्थिक और व्यापारिक लाभांश और लोगों के बीच आदान-प्रदान भी उल्लेखनीय रहे हैं, जो सभी पहलुओं में सदस्य देशों के लोगों को एक-दूसरे के करीब लाते हैं।

भारत ने पिछले पांच वर्षों में अमेरिका प्रायोजित क्वाड के प्रति अपने प्रेम के कारण ब्रिक्स और एससीओ के कामकाज की उपेक्षा की है। अब जब अमेरिकी राष्ट्रपति ट्र प लगातार अपने बयानों का उल्लेख करके भारतीय प्रधानमंत्री को अपमानित कर रहे हैं, तो यह एक ऐसा संवेदनशील मुद्दा बन गया है, जिसके बारे में हम सभी जानते हैं।

10 मई को भारत-पाकिस्तान युद्ध विराम से अब तक ट्र प ने 18 बार भारतीय प्रधानमंत्री को अपमानित किया और यहां तक कि पाकिस्तान के सेना प्रमुख असीम मुनीर के साथ लंच पर बातचीत भी की। अब हमारे प्रधानमंत्री को पिछले पांच वर्षों में अपनायी गयी अपनी विदेश नीति पर पुनर्विचार करना चाहिए। समय आ गया है कि भारत को ग्लोबल साउथ के लिए लड़ने के लिए ब्राजील, दक्षिण अफ्रीका और अन्य विकासशील देशों के साथ हाथ मिलाना चाहिए। देश का हित ग्लोबल साउथ के साथ है, जिसे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को नहीं भूलना चाहिए।

विविध समाचार

हैट्रिक विधायक से विधानसभा अध्यक्ष तक, हरविंद्र कल्याण की कार्यशैली ने बनाया सीपीए सम्मेलन को ऐतिहासिक

चंडीगढ। हरियाणा विधानसभा द्वारा हाल ही में आयोजित त्रिदिवसीय राष्ट्रमंडल संसदीय संघ (सीपीए) भारत क्षेत्र जोन–II सम्मेलन की अभूतपूर्व सफलता के पीछे विधानसभा अध्यक्ष हरविंद्र कल्याण का नेतृत्व, दूरदर्शिता और अथक परिश्रम प्रमुख आधार रहा। एक कुशल टीम लीडर के रूप में उन्होंने आयोजन की प्रत्येक गतिविधि पर स्वयं निगरानी रखी और देर रात तक अधिकारियों एवं टीम सदस्यों के साथ निरंतर संपर्क बनाए रखा। उनके मार्गदर्शन में यह सम्मेलन न केवल सफल रहा, बल्कि हरियाणा विधानसभा की राष्ट्रीय स्तर पर प्रतिष्ठा बढ़ाने वाला आयोजन भी साबित हुआ। घरौंडा विधानसभा क्षेत्र से भारतीय जनता पार्टी के टिकट पर लगातार तीन बार जीत दर्ज कर राजनीतिक हैट्रिक लगाने वाले हरविंद्र कल्याण पेशे से इंजीनियर हैं। उन्होंने वर्ष 1989 में बैचलर ऑफ इंजीनियरिंग की डिग्री प्राप्त की और पिछले तीन दशकों से अधिक समय से सार्वजनिक जीवन एवं राजनीति में सक्रिय भूमिका निभा रहे हैं। शांत, सौम्य और सहज व्यक्तित्व के धनी हरविंद्र कल्याण आधुनिक कार्यशैली के लिए भी जाने जाते हैं। वे अपने कार्यों को तकनीकी माध्यमों से प्राथमिकता के आधार पर व्यवस्थित रखते हैं और निर्धारित समय में उन्हें पूरा कराने के लिए लगातार प्रयासरत रहते हैं। उनकी मिलनसारिता, व्यवहार कुशलता और सभी वर्गों के लोगों से सहज संवाद स्थापित करने की क्षमता उन्हें अन्य नेताओं से अलग पहचान देती है। हरविंद्र कल्याण का जन्म 15 जनवरी 1967 को एक राजनीतिक एवं सामाजिक रूप से सक्रिय परिवार में हुआ। उनके पिता चौधरी देवी सिंह रोड हरियाणा एग्रो इंडस्ट्रीज कॉरपोरेशन के अध्यक्ष रह चुके हैं और किसानों तथा आमजन की समस्याओं को समझने और उनके समाधान के लिए जीवनभर सक्रिय रहे। उनकी माता श्रीमती प्रेम कौर का इसी वर्ष निधन हुआ, जिनका उनके जीवन पर गहरा प्रभाव रहा। राजनीतिक और प्रशासनिक जिम्मेदारियों में भी हरविंद्र कल्याण का योगदान उल्लेखनीय रहा है। वर्ष 2015 से 2019 तक उन्होंने हैफेड के अध्यक्ष के रूप में कार्य किया। विधानसभा में वे वर्ष 2019 से मार्च 2023 तक लोक लेखा समिति (पब्लिक अकाउंट्स कमेटी) के अध्यक्ष रहे।

इसके अतिरिक्त वर्ष 2015–16 तथा 2023–24 में एस्टिमेट्स कमेटी के अध्यक्ष के रूप में भी उन्होंने महत्वपूर्ण जिम्मेदारियां निभाईं। भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश कोषाध्यक्ष के रूप में लगभग एक दशक तक संगठनात्मक कार्यों में उनकी सक्रिय भूमिका रही। जनसमस्याओं को जमीनी स्तर पर समझने के लिए हरविंद्र कल्याण ने वर्ष 2004 में घरौंडा विधानसभा क्षेत्र के 104 गांवों में लगभग 375 किलोमीटर की पदयात्रा की। इस दौरान उन्होंने गांव–गांव जाकर लोगों की समस्याओं को समझा और क्षेत्र के विकास के लिए विस्तृत अध्ययन किया। यही कारण है कि वर्ष 2014 से अब तक घरौंडा क्षेत्र में अनेक विकास परियोजनाओं को धरातल पर उतारने में वे सफल रहे हैं। पारिवारिक जीवन में उनकी धर्मपत्नी रेशमा एक लेखिका हैं। उनकी पुत्री आयशाना सामाजिक क्षेत्र में सक्रिय हैं और एक गैर–सरकारी संगठन के माध्यम से ग्रामीण शिक्षा तथा महिला सशक्तिकरण के क्षेत्र में कार्य कर रही हैं। हरविंद्र कल्याण की कार्यशैली, संगठन क्षमता, तकनीक आधारित दृष्टिकोण और जनसेवा के प्रति समर्पण ने उन्हें हरियाणा की राजनीति में एक विशिष्ट पहचान दिलाई है। सीपीए सम्मेलन की सफलता ने एक बार फिर साबित किया है कि प्रभावी नेतृत्व, सुनियोजित प्रबंधन और टीम भावना के बल पर किसी भी आयोजन को नई ऊंचाइयों तक पहुंचाया जा सकता है।

दरबार साहिब के परिसर में बेअदबी की कोशिश, गुरु ग्रंथ साहिब के सामने तलवार उठाते दबोचा युवक

अमृतसर। श्री हरिमंदिर साहिब (स्वर्ण मंदिर) परिसर में बुधवार शाम एक युवक द्वारा कथित बेअदबी की कोशिश किए जाने का मामला सामने आया है। श्री अकाल तख्त साहिब के पीछे स्थित गुरुद्वारा शहीद बाबा गुरबख्श सिंह में चल रहे अखंड पाठ के दौरान युवक ने पावन स्वरूप के सामने रखी तलवार उठाने का प्रयास किया। हालांकि, मौके पर मौजूद सेवादारों ने तत्परता दिखाते हुए उसे तुरंत काबू कर लिया और बाद में पुलिस के हवाले कर दिया। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के अध्यक्ष एडवोकेट हरजिंदर सिंह धामी ने घटना की कड़ी निंदा करते हुए कहा कि आरोपी की उम्र करीब 35 वर्ष बताई जा रही है। युवक ने पहले गुरुद्वारे में माथा टेका और परिक्रमा की, जिसके बाद उसने अचानक तलवार उठा ली। सेवादारों द्वारा पूछताछ किए जाने पर उसने अपने कृत्य के पीछे कोई स्पष्ट कारण नहीं बताया। सेवादारों ने आगे पूछा कि उसे किसने भेजा तो आरोपी ने कहा– मैं अपनी मर्जी से आया हूं। मैं कभी झूठ नहीं बोलता, न मैं किसी से डरता हूं। अगर गलत लगूं तो चाहे काट दो। जानकारी के अनुसार, आरोपी ने अपनी पहचान उजागर नहीं की है। पूछताछ के दौरान उसने दावा किया कि वह किसी के कहने पर नहीं, बल्कि अपनी मर्जी से यहां आया था। उसने यह भी कहा कि वह अमृतसर अकेला आया है और उसके साथ कोई अन्य व्यक्ति नहीं था। एसजीपीसी अध्यक्ष हरजिंदर सिंह धामी ने कहा कि आरोपी को पुलिस के हवाले कर दिया गया है और उसके खिलाफ कड़ी कानूनी कार्रवाई की मांग करते हुए लिखित शिकायत भी दी गई है। उन्होंने कहा कि मामले की गहन जांच होनी चाहिए ताकि यह स्पष्ट हो सके कि युवक की मंशा क्या थी और क्या इसके पीछे कोई बड़ी साजिश या अन्य लोग शामिल हैं। धामी ने बताया कि प्रारंभिक जांच और सीसीटीवी फुटेज में आरोपी अकेला दिखाई दे रहा है। फिलहाल उसके साथ किसी अन्य व्यक्ति की संलिप्तता सामने नहीं आई है। अमृतसर पुलिस ने आरोपी की पहचान और पृष्ठभूमि का पता लगाने के लिए जांच शुरू कर दी है। पुलिस कमिश्नर ने भी भरोसा दिलाया है कि मामले में कानून के अनुसार सख्त कार्रवाई की जाएगी। एसजीपीसी अध्यक्ष ने कहा कि इससे पहले भी श्री हरिमंदिर साहिब में बेअदबी की कोशिशों की घटनाएं सामने आ चुकी हैं। उनके अनुसार, ऐसी घटनाएं धार्मिक माहौल को खराब करने, संगत की भावनाओं को आहत करने और गुरुद्वारा प्रबंधन को बदनाम करने की साजिश का हिस्सा हो सकती हैं।

दिल्ली में अमित शाह से मिले नायब सैनी

चंडीगढ। नई दिल्ली में हरियाणा के मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी ने केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री अमित शाह से शिष्टाचार भेंट कर राज्य के विकास और जनहित से जुड़े विभिन्न मुद्दों पर विस्तृत चर्चा की। मुख्यमंत्री ने मुलाकात के बाद कहा कि अमित शाह का मार्गदर्शन जनकल्याण और विकास के प्रति सरकार के संकल्प को निरंतर मजबूती प्रदान करता है। हालांकि इसे औपचारिक शिष्टाचार भेंट बताया गया है, लेकिन राजनीतिक और प्रशासनिक गलियारों में इस मुलाकात को काफी महत्वपूर्ण माना जा रहा है। चर्चा है कि बैठक में हरियाणा में चल रहे विकास कार्यों, संगठनात्मक गतिविधियों तथा आगामी प्रशासनिक फैसलों पर भी विचार–विमर्श हुआ। इस मुलाकात का महत्व इसलिए भी बढ़ जाता है क्योंकि हाल ही में हरियाणा भाजपा की नवनियुक्त प्रदेशाध्यक्ष डॉ. अर्चना गुप्ता भी अमित शाह से मुलाकात कर चुकी हैं।

कक्षा आठ के पाठ्यक्रम में शामिल होगा सिख गुरुओं और बाबा बंदा सिंह बहादुर का इतिहास

चंडीगढ़। हरियाणा सरकार ने सिख समुदाय से किये गये एक महत्वपूर्ण वादे को पूरा करते हुए राज्य के विद्यालयों की कक्षा आठ के इतिहास पाठ्यक्रम में सिख गुरुओं और बाबा बंदा सिंह बहादुर के जीवन, शिक्षाओं और बलिदानों को शामिल करने का निर्णय लिया है। अब विद्यार्थियों को सिख गुरुओं की विरासत, उनके आदर्शों, शहादत और समाज के प्रति योगदान के बारे में विस्तार से पढ़ने का अवसर मिलेगा। मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी ने 'हिंद दी चादर' गुरु तेग बहादुर जी की 350वीं शहादत वर्षगांठ के अवसर पर घोषणा की थी कि सिख इतिहास और गुरुओं की शिक्षाओं को स्कूली शिक्षा का हिस्सा बनाया जाएगा। सरकार ने अब इस घोषणा को अमलीजामा पहनाते हुए इसे पाठ्यक्रम में शामिल कर दिया है। मुख्यमंत्री ने कहा कि गुरु नानक देव से लेकर गुरु गोविंद सिंह जी तक सभी सिख गुरुओं ने मानवता, समानता, सेवा, करुणा, बंधुत्व और सामाजिक न्याय का संदेश दिया। उनकी शिक्षाएं आज भी सामाजिक सद्भाव, नैतिक मूल्यों और राष्ट्रीय एकता को मजबूत करने में मार्गदर्शक हैं। उन्होंने कहा कि बाबा बंदा सिंह बहादुर ने अन्याय और शोषण के खिलाफ ऐतिहासिक संघर्ष करते हुए कमजोर वर्गों के अधिकारों की रक्षा की। उनका जीवन साहस, नेतृत्व, देशभक्ति और जनसेवा का प्रेरक उदाहरण है।

नीति आयोग की बैठक में सीएम मान की हुंकार, पंजाब को मिले विशेष राज्य का दर्जा और बॉर्डर पैकेज

चंडीगढ। पंजाब के मुख्यमंत्री भगवंत सिंह मान ने स्पष्ट किया है कि पंजाब देश की सीमाओं की रक्षा करता है, फिर भी केंद्र का समर्थन अपर्याप्त हैय राज्य विशेष श्रेणी के दर्जे और समर्पित सीमा पैकेज का हकदार है। उन्होंने कहा कि अंतरराष्ट्रीय सीमा के किनारे 2,000 से अधिक गांवों के होने के बावजूद वाइब्रेंट विलेज–II के तहत केवल 107 सीमावर्ती गांवों को कवर किया गया है। पंजाब आतंकवाद, ड्रोन तस्करी, बाढ़ और सीमा तनाव का बोझ उठाता हैय केंद्र को राज्य को विकास में उसका उचित हिस्सा देना चाहिए। सीएम मान ने कहा कि सुरक्षित और समृद्ध पंजाब विकसित भारत 2047 को प्राप्त करने के लिए आवश्यक है। पंजाब सभी केंद्र प्रायोजित योजनाओं के तहत पहाड़ी राज्यों, पूर्वोत्तर और जम्मू–कश्मीर की तर्ज पर 90रू10 के वित्तपोषण की मांग करता है। 10 लाख रुपये के स्वास्थ्य कवर से लेकर शीर्ष क्रम के स्कूलों तक, पंजाब ने नीति आयोग में विकसित भारत के लिए शासन मॉडल प्रस्तुत किया। साथ ही, उन्होंने मांग की कि केंद्र को मोहाली को 'नेशनल नॉलेज हब' घोषित करना चाहिए और 'इंटीग्रेटेड सेमीकंडक्टर मेगा–क्लस्टर' स्थापित करना चाहिए। मुख्यमंत्री ने नीति आयोग में लंबे समय से लंबित मांगों को उठाया और सीमावर्ती क्षेत्रों के लिए न्याय तथा राज्य के राष्ट्रीय योगदान को मान्यता देने की मांग की। पंजाब के मुख्यमंत्री भगवंत सिंह मान ने गुरुवार को नीति (नेशनल इंस्टीट्यूशन फॉर ट्रांसफॉर्मिंग इंडिया) आयोग की गवर्निंग काउंसिल के समक्ष पंजाब की लंबे समय से लंबित चिंताओं को मजबूती से उठाया, सीमावर्ती क्षेत्रों के पुनरोद्धार के लिए एक विशेष पैकेज की मांग की और यह मांग रखी कि पहाड़ी राज्यों, उत्तर पूर्वी राज्यों और जम्मू–कश्मीर की तर्ज पर सभी केंद्र प्रायोजित योजनाओं के तहत 90रू10 वित्तपोषण के साथ पंजाब को विशेष श्रेणी का दर्जा दिया जाए। बैठक को संबोधित करते हुए, सीएम भगवंत सिंह मान ने एक फ्रंटलाइन सीमावर्ती राज्य के रूप में पंजाब के सामने आने वाली असाधारण सुरक्षा, आर्थिक और सामाजिक चुनौतियों पर प्रकाश डाला और जोर देकर कहा कि राज्य की आकांक्षाएं पूरी तरह से विकसित भारत 2047 के राष्ट्रीय लक्ष्य के अनुरूप हैं। पंजाब के सामने आने वाली अनूठी चुनौतियों पर बोलते हुए, सीएम भगवंत सिंह मान ने कहा, "पंजाब एक फ्रंटलाइन राज्य है जो पाकिस्तान के साथ 553 किलोमीटर की सीमा साझा करता है। राज्य को एक गहरे और बहुआयामी संकट का सामना करना पड़ रहा है जिसमें लगातार सीमा पार आतंकवाद, हेरोइन और हथियारों की ड्रोन–आधारित तस्करी शामिल है। इसके परिणामस्वरूप युवाओं में नशाखोरी की महामारी, संगठित अपराध और बीएसएफ एस्कॉर्ट के तहत सुरक्षा बाड़ और अंतरराष्ट्रीय

सीमा के बीच जमीन पर खेती करने वाले किसानों के लिए दैनिक कठिनाई पैदा हुई है।" प्राकृतिक आपदाओं और सुरक्षा संबंधी व्यवधानों के प्रभाव पर प्रकाश डालते हुए, मुख्यमंत्री ने कहा, "पंजाब को 2025 की बाढ़ जैसी प्राकृतिक आपदाओं का विनाशकारी प्रभाव भी झेलना पड़ा, जिसने 2,300 से अधिक गांवों को नुकसान पहुंचाया और अनुमानित ध12,905 करोड़ का नुकसान हुआ। ऑपरेशन सिंदूर के बाद पंजाब के निवासियों को जिस हमले का सामना करना पड़ा, वह पूरे देश को दिखाई दे रहा था।" सीएम मान ने कहा कि अंतरराष्ट्रीय सीमा के करीब स्थित घनी आबादी वाले गांव और कस्बे देश के अन्य हिस्सों में देखे गए आर्थिक विकास से वंचित रह गए हैं। उन्होंने उल्लेख किया कि दशकों की अनिश्चितता और जोखिम के परिणामस्वरूप सीमावर्ती जिलों में निवेश नगण्य रहा है और कई मामलों में, पूंजी का पलायन हुआ है और उद्योगों को बंद या स्थानांतरित करना पड़ा है। उन्होंने कहा, "हालांकि पंजाब हमारे पड़ोसी की लगातार शत्रुता के खिलाफ देश के लिए एक बफर के रूप में कार्य करता है, लेकिन भारत सरकार से राज्य और उसके सीमावर्ती क्षेत्रों के लिए समर्थन बेहद अपर्याप्त रहा है।" विकास पहलों में असमानता की ओर इशारा करते हुए, मुख्यमंत्री ने कहा, "हाल ही में शुरू किए गए वाइब्रेंट विलेज–II कार्यक्रम के तहत केवल 107 गांवों को कवर किया गया है, जबकि 2,000 से अधिक गांव और कस्बे सीमा के बहुत करीब स्थित हैं।" सीएम भगवंत सिंह मान ने कहा कि पंजाब ने बार–बार केंद्र सरकार से अंतरराष्ट्रीय सीमा को मजबूत करने और राज्य के सामने आने वाली कई चुनौतियों का समाधान करने के लिए तत्काल उपाय करने का आग्रह किया है। उन्होंने कहा, "पाकिस्तान के साथ हमारी अंतरराष्ट्रीय सीमा को सुरक्षित करने, इसे भविष्य के लिए तैयार करने और पंजाब के सामने आने वाले बहुआयामी संकट को दूर करने के लिए, हमने कई अवसरों पर केंद्र सरकार के समक्ष तत्काल मांगों की एक श्रृंखला रखी है। हालांकि, केंद्र की ओर से बहुत कम और उत्साहहीन प्रतिक्रिया मिली है, जो दुर्भाग्यपूर्ण और अवांछनीय है।" मुख्यमंत्री ने दोहराया कि मई 2025 में गवर्निंग काउंसिल की 10वीं बैठक के दौरान उठाई गई मांगों के साथ–साथ वर्तमान बैठक के दौरान प्रस्तुत की गई मांगें गंभीर विचार की हकदार हैं। उन्होंने कहा, "गवर्निंग काउंसिल की 10वीं बैठक के दौरान मेरे द्वारा उठाई गई और आज दोहराई गई पंजाब के लोगों की वास्तविक मांगों को कृपया स्वीकार किया जाए।" प्रधानमंत्री से पंजाब को अधिक समर्थन देने का आग्रह करते हुए, सीएम भगवंत सिंह मान ने कहा, "पंजाब और उसके लोग अपने स्वयं के नुकसान की कीमत पर भी एक शत्रुतापूर्ण पड़ोसी से देश और उसकी सीमाओं की रक्षा करने की अपनी प्रतिबद्धता में दृढ़ हैं।" यह आशा व्यक्त करते हुए कि पंजाब की चिंताओं को सकारात्मक प्रतिक्रिया मिलेगी, उन्होंने कहा, "मुझे उम्मीद है कि राज्य की वास्तविक और वैध मांगों पर अनुकूल विचार किया जाएगा और पंजाब को देश के आर्थिक विकास में उसका उचित सम्मान और हिस्सा दिया जाएगा।" सीएम भगवंत सिंह मान ने प्रधानमंत्री को आश्वस्त किया कि पंजाब विकसित भारत 2047 के दृष्टिकोण को प्राप्त करने के लिए केंद्र सरकार के साथ कंधे से कंधा मिलाकर काम करना जारी रखेगा। उन्होंने कहा, "पंजाब और उसके लोग भारत को विकसित भारत / 2047 बनाने की दिशा में भारत सरकार के साथ मिलकर काम करेंगे। केवल एक सुरक्षित, संरक्षित और संपन्न पंजाब ही विकसित भारत / 2047 की गारंटी दे सकता है।" पंजाब के विकास का रोडमैप प्रस्तुत करते हुए, सीएम भगवंत सिंह मान ने कहा, "लचीलेपन, वादे और क्षमता की भूमि पंजाब के मुख्यमंत्री के रूप में, मुझे एक रंगला पंजाब के लिए हमारा सामूहिक दृष्टिकोण प्रस्तुत करने पर गर्व है जो 2047 तक विकसित भारत को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने के लिए दृढ़ संकल्पित है।" उन्होंने कहा कि चूंकि पंजाब की आकांक्षाएं राष्ट्रीय प्राथमिकताओं के साथ मेल खाती हैं, इसलिए मानव पूंजी विकास पर केंद्रित चर्चाएं समय पर और महत्वपूर्ण दोनों हैं। मुख्यमंत्री ने एक परिवार–केंद्रित विकास मॉडल की कल्पना की जो हर बच्चे की भलाई सुनिश्चित करने, कामकाजी उम्र की आबादी को उत्पादक और अभिनव बनने के लिए सशक्त बनाने और बुजुर्गों को सम्मान और देखभाल प्रदान करने पर केंद्रित है। उन्होंने कहा, "इसके लिए हमें अपनी अंतर्निहित शक्तियों का दोहन करने, नवीन समाधानों के साथ चुनौतियों का डटकर सामना करने, लोगों को अत्याधुनिक कौशल के साथ सशक्त बनाने और एक ऐसा सक्षम वातावरण बनाने की आवश्यकता है जो उन्हें पंजाब और भारत की विकास गाथा के सक्रिय योगदानकर्ता और लाभार्थी बनने की अनुमति दे।"

Printed, Published,Edited, & Owned by Prakash Kumar Dhal, Printed at Promodini Publication, Main road , Chhend colony , Rourkela-15 & Published at ECR-73, Chhend Colony, Rourkela-15, Editor : Prakash kumar Dhal, Email:kalingasamachar@gmail.com , Mob: 9439951525, Ph. 0661-2646999

ओडिशा समाचार

कलिंग समाचार

राउरकेला, शनिवार 05 सितंबर 2026

20 लाख की लूट का मास्टरमाइंड भुवनेश्वर पुलिस ने पकड़ा

भुवनेश्वर ०४/०९ (संवाददाता):भुवनेश्वर पुलिस ने शिकायत करने वाले के करीबी दोस्त समेत दो लोगों को पहला इलाके के पास 20 लाख रुपये की लूट की साज़िश रचने और उसे अंजाम देने के आरोप में गिरफ़्तार किया। सूत्रों के मुताबिक, यह केस तब दर्ज किया गया जब शिकायत करने वाले प्रभात कुमार को घटना के दौरान तलवार से हुए हमले में चोटें आईं। गिरफ़्तार किए गए लोगों में सरोज सुतार और बाबुलू बेहरा हैं, जबकि इस क्राइम में शामिल उनके दूसरे साथी अभी भी फरार हैं। लूट तक का सिलसिला पुलिस ने बताया कि प्रभात ने 24 नवंबर को किसी दूसरे जान-पहचान वाले से लोन के तौर पर लिए गए 20 लाख रुपये निकाले थे। सरोज सुतार, जो पैसे लेने के समय उसके साथ था, ने कथित तौर पर अपने साथियों के साथ मिलकर पूरी रकम हड़पने की साज़िश रची। पुलिस ने कहा कि सरोज ने चाय पीने के बहाने प्रभात को जलसा बार के पास रोकने का इंतज़ाम किया। पहले से तय इंतज़ाम के मुताबिक, सरोज के साथियों को लेकर दो गाड़ियां मौके पर पहुंचीं, जबकि दोनों बैठे हुए थे। इसके बाद ग्रुप ने कथित तौर पर प्रभात पर तलवार से हमला किया और पूरे 20 लाख रुपये लेकर भाग गए। पुलिस ने अंदर की भूमिका का पता कैसे लगाया, हमले के बाद शिकायतकर्ता के साथ पुलिस स्टेशन जाने के बावजूद, सरोज के बयानों में अंतर था। जांचकर्ताओं ने इलाके के CCTV फुटेज की डिटेल में जांच की और आरोपियों के कॉल डिटेल रिकॉर्ड (CDR) की जांच की। फुटेज और मोबाइल-लोकेशन पैटर्न कथित तौर पर सरोज के दावों के उलट थे और हमलावरों के साथ तालमेल बिठाने का संकेत देते थे। वेरिफिकेशन के बाद, पुलिस ने उसे डकैती की साजिश का मुज़्य साजिशकर्ता बताया और पूछताछ के लिए हिरासत में लिया।

सूत्रों ने कहा कि पुलिस ने गिरफ़्तार आरोपियों से 5.70 लाख रुपये कैश, हमले में इस्तेमाल की गई तलवार और डकैती के दौरान कथित तौर पर इस्तेमाल की गई एक स्पोर्ट्स मोटरसाइकिल जज़्त की है। क्राइम सीन में शामिल गाड़ियों की मौजूदगी दिखाने वाले कई CCTV फ्रेम सबूत के तौर पर शामिल किए गए हैं। क्राइम लोकेशन के तौर पर पहचाने गए जलसा बार इलाके में काम करने वाले सर्विलांस कैमरे भी थे, जिससे सीक्वेंस को फिर से बनाने में मदद मिली।

आईजीएच को जटिल लंबर डिस्क चिकित्सा में मिली उल्लेखनीय सफलता

राउरकेला ०४/०९ (संवाददाता): राउरकेला इस्पात संयंत्र (आरएसपी) के इस्पात जनरल अस्पताल (आईजीएच) ने एक और उल्लेखनीय उपलज़्धि अपने नाम की है, जहां 32 वर्षीय महिला मरीज, जो आयुष्मान भारत योजना की लाभार्थी हैं, गंभीर रीढ़ की हड्डी की शल्यचिकित्सा के तुरंत बाद अगले ही दिन फिर से चलने में सक्षम हो गईं। मरीज़ को पीठ के निचले हिस्से में तेज़ दर्द के साथ भर्ती कराया गया था, जो दाहिने पैर तक फैल रहा था, साथ ही खड़े होने, चलने-फिरने, बिस्तर पर करवट लेने और पेशाब और मल त्याग करने में भी दिक्कत हो रही थी ţ ये परेशानी उसे पिछले पाँच दिनों से थी ţ आईजीएच में किए गए एमआरआई से पता चला कि एल5-एस1 डिस्क घिसकी हुई है, जिसके कारण कॉडा इक्वाइना संलक्षण दिखने लगे थे जो एक न्यूरोसर्जिकल आपात स्थिति है, जिसमें तुरंत हस्तक्षेप के आवश्यकता होती है। तत्काल कार्रवाई करते हुए, चिकित्सा दल ने आपातकालीन लज़्बर स्पाइन शल्यचिकित्सा की योजना बनाई और उसे अंजाम दिया। ऑपरेशन का नेतृत्व वरिष्ठ कंसल्टेंट (न्यूरोसर्जरी), डॉ. मनोज कुमार देव ने किया और अतिरिक्त मुज़्य चिकित्सा अधिकारी, डॉ. संजुक्ता पाणिग्रही ने एनेस्थीसिया की जिज़्मेदारी संभाली। सिस्टर गोधूली और सिस्टर अंजली ने ऑपरेशन के दौरान महत्वपूर्ण सहयोग प्रदान किया। मरीज़ में ज़बरदस्त स्वस्थ सुधार दिखने लगी और शल्यचिकित्सा के सिर्फ़ एक दिन बाद वह खड़ी होने और चलने-फिरने लगी। शल्यचिकित्सा के पश्चात के देखभाल सिस्टर गौरी, सिस्टर सस्मिता, सिस्टर मनीषा, सिस्टर रुबी और सिस्टर सोनिया द्वारा अत्यंत कुशलता से की गई, जिससे मरीज का स्वास्थ्य लगातार बेहतर होता गया। राहत और आभार व्यक्त करते हुए, मरीज ने बताया कि लक्षणों में 80त्न का सुधार है । अब वह पूरी तरह से ठीक हो रही हैं और जल्द ही उन्हें अस्पताल से छुट्टी दे दी जायेगी । सफलता की यह कहानी आईजीएच की उत्कृष्ट स्वस्थ सेवा केंद्र होने के पुष्टि करती है और यह दर्शाती है कि सेल, राउरकेला इस्पात संयंत्र आयुष्मान भारत जैसी योजनाओं के तहत उन्नत, संवेदनशील और सुलभ स्वास्थ्य सेवाएँ प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध है।

बारामुंडा फुट ओवरब्रिज का काम पूरा, लिफ्ट की सुविधा दी

भुवनेश्वर ०४/०९ (संवाददाता): भुवनेश्वर के बिज़ी बारामुंडा में 57 मीटर लंबा, 3 मीटर चौड़ा और 6 मीटर ऊंचा पैदल चलने वालों के लिए फुट ओवरब्रिज बनने वाला है, और दिसंबर 2025 के आखिर तक इसके पूरा होने की उज़्मीद है। इसके अलावा, मंज़ूर प्लान के मुताबिक, ओवरब्रिज के दोनों तरफ लिफ़्ट भी लगा दी गई हैं और चालू होने के बाद ये चालू हो जाएंगी। सूत्रों के मुताबिक, नेशनल हाईवे अथॉरिटी ऑफ़ इंडिया ने नेशनल हाईवे-16 के भुवनेश्वर-कटक हिस्से पर चार फुट ओवरब्रिज बनाने को ऑफिशियली मंज़ूरी दे दी है, जिसमें पलासुनी, बारामुंडा और चांदीखोल-जगतपुर-भुवनेश्वर कॉरिडोर पर मंगुली में दो जगहें शामिल हैं।

चारों स्ट्रक्चर इंजीनियरिंग प्रोज़्योरमेंट एंड कंस्ट्रज़्शन मोड पर बनाए जा रहे हैं, जिनकी बिड प्रोजेज़्ट कॉस्ट 7.29 करोड़ रुपये है।

पलासुनी और बारामुंडा हाई-रिस्क लोकेशन ध्यान देने वाली बात यह है कि यह फैसला सालों से लोगों की मांग के बाद लिया गया है, खासकर पलासुनी में, जहां लोग करीब एक दशक से फुट ओवरब्रिज की मांग कर रहे थे। दो साल पहले जारी किया गया एक पुराना टेंडर कैंसिल कर दिया गया था, जिससे पैदल चलने वालों की सुरक्षा की चिंताएं अनसुलझी रह गईं। प्रोजेज़्ट रिकॉर्ड में दिए गए एज़्सीडेंट डेटा से पता चलता है कि पिछले साल पलासुनी हिस्से में 100 से ज़्यादा एज़्सीडेंट हुए, जिनमें तीन मौतें भी शामिल हैं, जो एक खास पैदल चलने वालों के लिए क्रॉसिंग की ज़रूरत को दिखाता है। इसी तरह, राजधानी कॉलेज और मुज़्य ट्रांसपोर्ट लिंक के पास बसे बारामुंडा में भी रोज़ाना हज़ारों पैदल चलने वाले आते-जाते हैं, जिससे लोगों और लोकल बिज़नेस की तरफ से भी इसी तरह की सुरक्षा की मांग उठ रही है। बारामुंडा और पलासुनी फुट ओवरब्रिज के लिए, लगभग 5 करोड़ रुपये का आवंटन किया गया है, जिसमें लिज़्ट, पैदल चलने वालों के लिए बेहतर एज़्सेस और सुरक्षा इंफ्रास्ट्रक्चर के लिए इंतज़ाम शामिल हैं। भुवनेश्वर की अपराजिता सारंगी ने टेंडर अप्रूवल डॉज़्यूमेंट्स को पज़्लिक में पोस्ट किया, जिसमें बताया गया कि मंज़ूर किए गए स्न्ह्लक्ल्य से आने-जाने वालों की सुरक्षा बढ़ेगी और शहर के सबसे बिज़ी हाईवे हिस्सों पर आना-जाना आसान होगा। एक बार बन जाने के बाद, चार नए ओवरब्रिज से भुवनेश्वर में ह्॥- 16 कॉरिडोर पर पैदल चलने वालों और गाड़ियों के बीच टकराव में काफी कमी आने की उज़्मीद है।

सरकार ने अवैध खनन के लिए 126 करोड़ रुपये का जुर्माना वसूला

भुवनेश्वर ०४/०९ (संवाददाता): ओडिशा सरकार ने गैर-कानूनी माइनर मिनरल माइनिंग और ट्रांसपोर्टेशन के खिलाफ बड़ी कार्रवाई की है, जिसमें 2022 और अज़्टूबर 2025 के बीच 126 करोड़ रुपये का जुर्माना वसूला गया है। यह जानकारी राज्य विधानसभा में माइंस मिनिस्टर विभूति भूषण जेना ने एक लिखित जवाब में दी। मिनिस्टर ने गुरुवार को बताया कि मौजूदा फाइनेंशियल ईयर में सितंबर तक 655 करोड़ रुपये का रेवेन्यू इकट्ठा किया गया है। गैर-कानूनी ट्रांसपोर्टेशन को रोकने के लिए, अधिकारियों ने 30 जिलों में 15,187 सीज़र्स किए हैं।

कुल 3,219 केस रजिस्टर किए गए हैं, जिससे 126.51 करोड़ रुपये का जुर्माना वसूला गया है। धर्मशाला, झारसुगुड़ा, पिपिली, टांगी, मार्शाघाई, बारंग, कनिहाल, जलेश्वर, हिंडोल, पुरुषोज़मपुर और रघुनाथपुर सहित ग्यारह संवेदनशील तहसीलों को अवैध रेत खनन के लिए हॉटस्पॉट के रूप में पहचाना गया है। खान विभाग ने बताया कि हिंडोल, पुरुषोज़मपुर और रघुनाथपुर में छोटे खनिज चोरी के सबसे ज्यादा मामले दर्ज किए गए, जिससे इन क्षेत्रों में निगरानी और प्रवर्तन बढ़ा दिया गया।

उत्कल संगीत महाविद्यालय में ‘हैरेसमेंट’ को लेकर विवाद

भुवनेश्वर ०४/०९ (संवाददाता):उत्कल संगीत महाविद्यालय में स्टूडेंट्स के कथित हैरेसमेंट को लेकर विरोध प्रदर्शन के बाद टेंशन बढ़ गया, जिसके बाद संबंधित लेक्चरर को निकाल दिया गया। एक बड़ी कार्रवाई में, आरोपी लेक्चरर शत्रुघ्न सामल को गुरुवार को भुवनेश्वर के उत्कल संगीत महाविद्यालय से एक स्टूडेंट के कथित हैरेसमेंट के सिलसिले में निकाल दिया गया। प्रिंसिपल बिजय जेना ने कार्रवाई की पुष्टि करते हुए कहा कि अधिकारियों को दी गई एक लिखित शिकायत के बाद सामल को निकाल दिया गया। शिकायत के बाद, सामल को कथित तौर पर पुलिस ने हिरासत में भी लिया है। दिन में पहले, स्टेट कल्चर डिपार्टमेंट की तीन सदस्यों की टीम ने स्टूडेंट के कथित हैरेसमेंट की जांच शुरू की। रिपोर्ट्स के मुताबिक, स्पेशल सेक्रेटरी देबा प्रसाद दाश के नेतृत्व में टीम ने दो अन्य अधिकारियों के साथ पूरी जांच करने के लिए कैंपस का दौरा किया।जांच के बाद, सामल को निकाल दिया गया। यह आरोप कुछ छात्राओं ने लगाया था जिन्होंने ड्रामा डिपार्टमेंट के लेक्चरर सामल पर हैरेसमेंट का आरोप लगाया था। कहा जाता है कि इस घटना से कैंपस में अशांति फैल गई, जिसके बाद छात्रों ने शोर-शराबा किया। स्टूडेंट्स सड़कों पर भी उतर आए। खबर है कि प्रोटेस्ट के दौरान एक लड़की बेहोश हो गई, और उसे हॉस्पिटल में भर्ती कराया गया। लोकल पुलिस और कॉलेज के लेक्चरर्स ने स्टूडेंट्स को शांत करने की कोशिश की, और आखिरकार वे कैंपस के अंदर चले गए।

उत्कल संगीत महाविद्यालय के प्रिंसिपल बिजय जेना ने कहा, स्टूडेंट्स के आरोप के मुताबिक, शत्रुघ्न सामल नाम के एक गेस्ट फैकल्टी मेंबर को आज निकाल दिया गया है। इस बारे में पुलिस दूसरी लीगल कार्रवाई करेगी। जो भी इस तरह का बर्ताव करता पाया जाएगा, उसके खिलाफ कानून के मुताबिक कार्रवाई की जाएगी। उन्होंने आगे कहा, स्टूडेंट्स को लिखकर शिकायत करनी चाहिए। अगर स्टूडेंट्स ने लिखकर शिकायत दी होती, तो या तो मैं उस लेक्चरर को निकाल देता या समस्या का पहले ही हल कर देता।

खुर्दा में 1448 भारतीय लैपशैल कछुए जज़्त किए गए

भुवनेश्वर ०४/०९ (संवाददाता): संरक्षित वन्यजीव प्रजातियों की अवैध तस्करी के खिलाफ एक बड़ी कार्रवाई मेंए राजस्व खुफ्यि निदेशालय खुर्दा से 1448 भारतीय ज़्लैपशेल कछुए जज़्त किए और इस संबंध में एक व्यक्ति को गिरफ़्तार किया। पश्चिम बंगाल के बर्धमान जिले के मूल निवासी 38 वर्षीय आरोपी महादेव डे पर वन्यजीव संरक्षण अधिनियमए 1972 की अनुसूची.प् की धारा 50;1 सी के साथ धारा 9 और क्रम संज़्या 44 के तहत मामला दर्ज किया गया है।

आरएसपी में ज्ञान मंच प्रश्नोज़री प्रतियोगिता का दूसरा संस्करण आयोजित

राउरकेला ०४/०९ (संवाददाता): राउरकेला इस्पात संयंत्र के ज्ञानार्जन एवं विकास विभाग ने गोपबंधु सभागार में ज्ञान मंच प्रश्नोज़री प्रतियोगिता का दूसरा संस्करण आयोजित किया। यह आयोजन हर दो महीने में होने वाले ज्ञान-साझाकरण पहल आरएसपी ज्ञान मंच के तहत किया गया था, जिसका मकसद सयंत्र के कर्मचारियों के बीच सीखने के संस्कृति को बढ़ावा देना, तकनीकी जागरूकता बढ़ाना, प्रबंधकीय और वैश्विक डोमेन पर जागरूकता को बढ़ाना और सज़्मिलित काम, प्रतिस्पर्धी भावना, अंतर-विभागीय संबंध और क्रॉस-फ़ंज़्शनल ज्ञान साझाकरण को मज़बूत करना है। ऑनलाइन प्रश्नोज़री में कुल 28 टीमों ने भाग लिया, जिनमें से हर एक में दो-दो सदस्य थे । वरिष्ठ प्रबंधक (सीसीडज़्लू), सुश्री कविता बिसोई ने क्विज़ मास्टर के तौर पर कमान संभाला और आयोजन को संचालित किया। कुल 50 सवालों के साथ दो राउंड थे। एक दिलचस्प और दिमाग को मज़बूत करने वाले प्रतियोगिता के बाद, सहायक महाप्रबंधक (कोक ओवन्स), श्री संपद मिश्रा और वरिष्ठ प्रबंधक (एनपीएम), श्री अभिजीत पटनायक प्रश्नोज़री प्रतियोगिता के विजेता बने। दूसरा पुरस्कार दोनों एमटी(टी), श्री आलोक यादव और श्री अभिषेक तिवारी ने प्राप्त किया। ज्ञान मंच क्विज़ के इस संस्करण की थीम गुणवज़ा प्रबंधन और प्रणाली थी।

इस आयोजन को उप महाप्रबंधक (मानव संसाधन-ज्ञानार्जन एवं विकास), श्री के के जायसवाल ने समन्वित किया। मान्यता ढांचा के तौर पर, जीतने वाली टीम को 3000/- रुपये (1500/- रुपये प्रत्येक सदस्य) के साथ 250/- रुपये मूल्य की किताबें प्रत्येक सदस्य को मिलेंगी, जबकि रनर-अप टीम को 2000/- रुपये (1000/- रुपये प्रत्येक सदस्य) के साथ 250/- रुपये मूल्य की किताबें प्रत्येक सदस्य को मिलेंगी। पुरस्कार राशि सीधे विजेताओं के सैलरी अकाउंट में क्रेडिट की जाएगी। खास बात यह है कि आरएसपी ज्ञान मंच ज्ञानार्जन एवं विकास विभाग द्वारा चलाया जाने वाला एक स्ट्रक्चर्ड, हर दो महीने में होने वाला प्रश्नोज़री कार्यक्रम है, जिसे आरएसपी और दूसरी सेल इकाई के पैनलबद्ध क्विज़ मास्टर्स की मदद से चलाया जाता है। यह एस-1 से ई-7 तक के सभी नियमित कर्मचारियों के लिए खुला है, जिसमें दो सदस्यों वाली टीम को मौके पर ही रजिस्टर करने की इजाज़त है। टीमों को बाद के संस्करण में पार्टनर बदलने की आज़ादी है, हालांकि जीतने वाले युगल जोड़ी को एक विज़ीय वर्ष में सिर्फ़ दो बार दोहराने की इजाज़त है। क्विज़ में फाइनलिस्ट को शॉर्ट लिस्ट करने के लिए एक ऑनलाइन शुरुआती राउंड होता है, जिसके बाद एक पावरपॉइंट- आधारित, दृश्य-श्रव्य और परस्पर संवादात्मक फाइनल राउंड होता है।